मनोजमंजरी ।

तृतीयकलिका ।

उद्दीपनानन्तर सखी, सखा, दूती और षट् ऋतु
आदि वर्णन ।

डुमराँव निवासी नकछेदीतिवारी
उपनाम अजान कवि द्वारा संगृहीत
और प्रकाशित ।

"सोनजुही सी राधिका, अलसि कुसुम से श्याम
मो हिय चमन वसन्त में, फूले रहैं सुदाम" ॥ १ ॥

अधूरा देखने से न देखना अच्छा ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सन् १८८७ ईस्वी ।

प्रथम बार १००० पुस्तक] [मूल्य मै डाक ।)॥

मनोजमंजरी।

तृतीयकलिका।

उद्दीपनानन्तर सखी, सखा, दूती और षट् ऋतु
आदि वर्णन।

डुमराँवँ निवासी नकछेदीतिवारी
उपनाम अजान कवि द्वारा संगृहीत
और प्रकाशित।

"सोनजुही सी राधिका, अतसि कुसुम से स्याम।
सोहिय चमन बसन्त में, फूले रहैं मुदाम" ॥ १ ॥

अधूरा देखने सें न देखना अच्छा।

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई।

सन् १८८७ ईस्वी।

भूमिका ।

प्यारे रसिक गण !

श्री रसिक शिरोमणि सांवरे की अनूप क्रपा सें यह भी तीसरी कलिका बिकसित हुई क-हिये कुछ सुगंध है ? मैं तो हर्षित हूं कि कुसु-माकर बायु ने प्रथम और दूसरी कलिका के भांति इसे भी सुगन्धित कर बिकसित किया लीजिये एक बार समग्र देखिये तदनन्तर जोकुछ किसी प्रकार की न्यूनता हो उसे क्रपापूर्वक पूर्ण कीजिये और साथही यह आशीर्वाद दीजिये कि "अजान हजारा" अपने पूर्ण रूप से शीघ्र प्रकाशित हो ।

डुमराँवँ वैशाख शुक्लापूर्णिमा सम्बत् १९४३	रसिकजन चरणानुरागी अजान।

मुद्रित विषयों का सूचीपत्र ।

मनोजमंजरी।

तृतीयकलिका।

उद्दीपनानन्तर सखी, सखा, दूती और षट् ऋतु
आदि बर्णन।

डुमराँवँ निवासी नकछेदीतिवारी
उपनाम अजान कवि द्वारा संगृहीत
और प्रकाशित।

"सोनजुही सी राधिका, अतसि कुसुम से स्याम।
सोहिय चमन बसन्त में, फूले रहैं सुदाम" ॥ १ ॥

अधूरा देखने से न देखना अच्छा।

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई।

सन् १८८७ ईस्वी।

भूमिका ।

प्यारे रसिक गण !

श्री रसिक शिरोमणि सांवरे की अनूप कृपा से यह भी तीसरी कलिका बिकसित हुई कहिये कुछ सुगंध है ? मै तो हर्षित हूं कि कुसुमाकर वायु ने प्रथम और दूसरी कलिका की भांति इसे भी सुगन्धित कर विकसित किया लीजिये एक बार समग्र देखिये तदनन्तर जो कुछ किसी प्रकार की न्यूनता हो उसे कृपापूर्वक पूर्ण कीजिये और साथही यह आशीर्वाद दीजिये कि "अजान हजारा" अपने पूर्ण रूप से शीघ्र प्रकाशित हो ।

डुमराँवँ
वैशाख शुक्लापूर्णिमा
सम्बत् १९४३

रसिकजन चरणानुरागी
अजान ।

मुद्रित बिषयों का सूचीपत्र ।

मनोजमंजरी।

तृतीय कलिका।

श्री गणेशायनमः।

मंगलाचरण—छप्पै।

समय सांझ नभ मांझ श्याम घन घटा घनेरी। बहुरि प्रबल तम पटल सकल धरनी तल घेरी। पुनि तमाल तरु जाल सघन बन दीखत आगे। सहज भीरु नव नारि बहुरि अकसर भय लागे। अस मन बिचारि गिरधर सुघर डगर छाड़ इमि सखि बयन। सुनि बिजयनन्द भरि अंक भरि बिहरत हरि बितरैं चयन॥ १॥

अथ बिभावान्तर्गत आलम्बनोद्दीपन
विशेष कथन—दोहा।

याहि कारण को सुकवि कहत बिभाव बिसेख।
सो है बिधि आलम्बनरु उद्दीपन अवरेख॥ २॥
आलम्बन अवलम्बि रस जामें रहै बनाय।
उद्दीपन दीपन करै रस को परम सोहाय॥ ३॥

यथा छप्पै।

दंपति जोबन रूप जाति लच्छन जुत सखि जन।
कोकिल कलित बसंत फूल फल दल अलि उपबन॥ जल

जुत जलचर अमल कमल कमला कमलाकर। चातक मोर सु सब्द तड़ित घन अंबुद अम्बर ॥ सुभ सेज दीप सौगंध गृह खान पान परधान मनि। नव नृत्य भेद बीनादि सब आलम्बन केसव बरनि ॥ ४ ॥

दोहा।

आलम्बन के भेद तिय नायक बरनि बिसेख।
अब उद्दीपन के कहत जेहैं भेद असेख ॥ ५ ॥
सखी सखा दूती सु बन खट रितु उपबन पौन।
उद्दीपनहिं बिभाव में बरनत कवि मति भौन ॥ ६ ॥
चंद चाँदनी चंदनहुँ पुहुप पराग समेत।
यौंही और सिंगार सब उद्दीपन के हेत ॥ ७ ॥

सखी * वर्णन।

जिन ते नायक नायिका राखि कछु न दुराव।
सखी कहावैं ते सुघर सांची सरल सुभाव ॥ ८ ॥
हितकारिनि विज्ञानिनी अंतरंग बहि रंग।
चारि भेद ये सखिन के बरनत बुद्धि उतंग ॥ ९ ॥

क्रमशः उदाहरण।

चित चाहत अलि अंग तुव लहि दीपक परिमान।

---

* सखी, सखा और दूती में क्या अंतर है? प्रायः क्रिया का संकर होता है। और उद्दीपनमें क्यों लिखा?

लै लै जनम पतंग को सदा वारिये प्रान ॥ १० ॥
गुंज लेन तू आज कत कुंज गई यह काल ।
कंटक छत नख चाहि कै चखन चाहि री बाल ॥११॥
मन मोहन ल्यावति नहीं सोहन ल्यावति धाय ।
कारे याहि डस्यो नहीं कारे डस्यो बनाय ॥ १२ ॥
पिय देखत ह्वीं काम तें गयो कंप तिय आय ।
सीत जानि अलि अग्नि को ल्याई बेगि जराय ॥१३॥

सखी कर्म ।

काज सखिन के चारिये मण्डन सिच्छा दान ।
उपालंभ परिहास पुनि बरनत सुकवि सुजान ॥१४॥
मण्डन तियहि सिंगारिबो सिच्छा विनय विलास ।
उपालंभ सु उराहनो हँसी करब परिहास ॥ १५ ॥

मण्डन यथा ।

सखी तिया की देह में सजे सिंगार अनेक ।
कजरारी अंखियान में भूल्यो काजर एक ॥ १६ ॥
कहा करौं जो आंगुरिन अनी घनी चुभि जाय ।
अनियारे चख लखि सखी कजरा देति डराय ॥१७॥

शिक्षा यथा—कवित्त ।

लैहै बान्हि जूरो तज पानिप सो पूरो निज गुनन गरूरो कुंडली को रूप रैहै री । हरिदास ऐसी चोटी ए-ड़िन लों लोटिये तो मोतिन की काचुरी की सोभ सरसै

है री ॥ जाय मत गोकुले बिलोकि तोहि दूरही तें कुंजन तें बांसुरी बजाय आय जैहै री। काली जाम आली रस ख्याली पछुवै है कहूं व्याली सम बेनी बनमाली लखि पैहै री ॥ १८ ॥

जाय जिन या समैं तू राधे सुन स्याम पांहि बार बार तोहि कर जोरि कर हारी री। भारी गिरि भार कर माहें ले उचाए हरि ता तरे दुरे हैं गाय गोपिका बिचारी री॥ तेरे नैन तेरे बस नाहिं कहौं साची मैं तो लाल ललचे है लखि रूप की उजारी री। खेद कंप ह्वै है गिरि गिरि है अवसि आज पैहै तू कलंक लोग देहैं तोहि गारी री ॥१९॥

भ्रुकुटी कमान तानि फिरति अनोखी कहा कहत किसोर कोर कज्जल भरे है री। तेरे दृग देखे मेरी कान्हर डेरात इतै मघवा निगोड़ो उतै रोस पकरे हैरी ॥ कीरति कुमारी है दुलारी वृषभान जू की मेरी सीख मान तेरो कहा बिगरै है री। चंचल चपल ललचौंहैं चख मूद तोलौं जौलौं गिरधारी गिर नख पै धरे हैं री ॥ २० ॥

उपालम्भ यथा।

दया करि चितै चित हित कौ चुराय लियो फिरि हित चितए न यही सोच नित है। दिलदार जन परबस मैं बसे जो तिनै नेसुक न चाव निसु बासर चकित है ॥ देखे टक लागै अन देखे पलकौ न लागे देखे अन देखे

नैना निमिख रहत है। सुखी हौ जू कान्ह तुमै काहू की न चिन्ता वह देखेहू दुखित अन देखेहू दुखित है ॥२१॥

ब्रज बहि जाय न कहूं यौं आय आंखिन तें उमड़ि अनोखी घटा बरसति मेह की। कहै पदमाकर चलावै खान पान की को प्रानन परी है आनि दहसति देह की ॥ चाहिये न ऐसी वृषभान की किसोरी तोहि आई दै दगा जो ठीक ठोकर सनेह की। गोकुल की कुल की न गैल की गोपालें सुधि गोरस की रस की न गोवन की गेह की ॥ २२ ॥

दोहा।

कैसे आए हौ निरखि तुम तहँ नंद किसोर।
भरभरात भामिनि परी थरथरात घन घोर ॥२३॥

परिहास यथा—कवित्त।

वृन्दावन चंद अहो आनद के कंद तुम माधव मुकन्द हो अनन्द छवि जोरी के। नंद जू के नंद बलदेव के सहोदर सखान में सराहे घन स्याम मति भोरी के॥ फागुन के औसर फजीहत बजाय ढोल कहत कहाए वृष-भान की किसोरी के। गायन के रहुआ गुलाम ब्रज गो-पिन के हो हो हरि भडुआ हजार दार होरी के ॥ २४ ॥

सवैया।

री ललिता वह कौन सी पाहुनि आई तिहारई

ज्योति बुलाए। छोटी सी छाती छवानि लौं बेनी नरोत्तम रूप की लूटि सो पाए॥ सारी हरी अंगिया घन बेलि की घूमत सो लहंगा थिरकाए। कंज सो आनन खंज से नैननि एड़िन ईंगुर सो लपटाए॥ २५॥

दोहा।

लाय बिरी मुख लाल के खैंच लई जब बाल।
लाल रहे सकुचाय तब हँसी सबै दै ताल॥ २६॥

नायक सखा वर्णन।

कहे जु नायक के सबै प्रथमहि बिबिध प्रकार।
अब बरनत हौं तिनहिं के सचिव सखा जे चार॥२७॥
पीठ मर्द बिट चेट पुनि बहुरि बिदूषक होय।
मोचै मान तियान के पीठ मर्द है सोय॥ २८॥
सु बिट बखानत हैं सु कवि चातुर सकल कलान।
दुहुन मिलावै में चतुर वहै चेट उर आन॥ २९॥
स्वांग ठान ठानै जु कछु हांसी बचन बिनोद।
कह्यो बिदूषक सो सखा कबिन मानि मन मोद॥३०॥

पीठमर्द यथा॥ कवित्त।

लाल अपने पै अलि इतो ना रिसैये बलि कहा भयो बातें हंस्यो नेक नद नन्द है। बैठि बोलियत हिलि मिलि खेलियत कहा सुन्दर यों कीजियत हिये दुख दन्द है॥ हाहा पेख सौंहें तोहि कोटि कोटि सौंहें करी ऐसे समै मान तेरी ऐसी मतिमन्द है। कैसो नीको नायक

सकल सुख दायक सो कैसी नीकी चांदनी औ कैसो नीको चन्द है ॥ ॥ ३१ ॥

पुहुप पलासन के आसन अनूप बैठि सौरभ गुलाब आब आसव भरत है। त्रिविध समीर माल मंडल मलय कर फेरत प्रसिद्ध सिद्ध रूप बिलसत है ॥ चुन्नीलाल कहै ये संजोगी रितुराज आज साज विश्व बिजय विनोद वितरत है। तंत्र कर कोकिल मलिन्द जप जोग जंत्र मंजुल मनोज मंत्र साधन करत है ॥ ३२ ॥

दोहा।

हौं गुवाल पै भल चहत तेरोई ब्रज बाल।
चलति क्यों न नदलाल पै लै गुलाल रंग लाल ॥३३॥

विटयथा सवैया।

पीत पटी लकुटी पदमाकर मोर पखा लै कहूं गहि नाखी। यों लखि हाल गुपाल को ताछिन बाल सखा सुकला अभिलाखी ॥ कै कल कोकिल कैसो कुहू कुहू कोमल कोक की कारिका भाखी। रूसी हुती ब्रजबाल के सामुहें आइ रसाल की मंजरी राखी ॥ ३४ ॥

चेटक यथा।

देव संजोग तें आनि जुरे दोउ कुंज मे कान्हर राधिका रानी। खेले न बोलि सकै कहि सुन्दर सोज त्यों बैठि रहे चुप ठानी ॥ मेरो सकोच कियो इन दोउन चातुर चेटक यों जब जानी। या मिसि आप उहां तें उठ्यो जमुना तट जात हौं पीवन पानी ॥ ३५ ॥

विदूषक यथा ।

आपहि कुंज के भीतर पैठि सुधारि के सुन्दर सेज बिछाई । बातें बनाय अनेकन भांति की माधो सौं आनि के राधा मिलाई ॥ आली कहा कहौं हांसी की बात विदूषक जैसी करी है ढिठाई । जाय उहां पिछुवार उतै फिरि बोलि उठ्यो वृषभान की नाई ॥ ३६ ॥

इति सखा ॥ अथ * दूती वर्णन ।

दोहा ।

मिलि न सकैं जे तिय पुरुष तिहि चित हित उपजाय ।
छल बल आन मिलावई सो दूती ठहराय ॥ ३७ ॥
ताके हैं द्वै भेद यह कोविद करत बखान ।
प्रथम दूतिका कहत पुनि बानदूतिका जान ॥ ३८ ॥
पठई आवै और की दूती कहिये सोय ।
अपनी पठई होय सो बान दूतिका जोय ॥ ३९ ॥
जाति भेद की दूतिका कवि जन कहैं अनेक ।
ग्रंथ बाढ़िवे के लिये कहे न यामे एक ॥ ४० ॥
प्रकृति भेद है तीनि बिधि सकल दूतिका मांहि ।
उत्तम मध्यम अधम यह बरनत सुकवि सरांहि ॥ ४१ ॥
केवल अपनी जुक्ति सों रचना करति विचित्र ।

---

* जैसे सखी सखा निर्माण किया तैसे दूती दूत क्यों नहीं ?

बरनत उत्तम दूतिका कविजन परम पवित्र ॥ ४२ ॥
सिखई बातन मे मिलै जो तिय करति बसीठ ।
है वह मध्यम दूतिका रहति बचाए दीठ ॥ ४३ ॥
केवल सिखई बात को निसि दिन करति बखान ।
अधम दूतिका † कहत हैं ताको सुमति सुजान ॥ ४४ ॥
बान दूतिका ह्व त्रिविधि बरनत कवि अभिराम ।
हित अनहित अरु हिताहित भाखति बचन सुदाम॥४५॥
इक दूती के भेद को षट विधि कियो बखान ।
स्वयं दूतिका सातईं बरनत सकल सुजान ॥ ४६ ॥
जो क्योंहूं न मिलै कहूं केसव दोऊ इठ ।
तौ तब अपनै आपही बुधि बल करति बसीठ ॥ ४७ ॥
विनय सु निन्दास्तुति विरह कहिबो औ परबोध ।
संघट्टन ये काज खट भाखत सबै सुबोध ॥ ४८ ॥

† यद्यपि सामान्य प्रचलित वनिता विभेद के ज्ञाता प्रिय पाठकों को यह क्रम असह्य होगा परन्तु इस विषय को भली भांति सोचना चाहिये कि परमाचार्य्य बिल-ग्राम वासी सैयद गुलाम नवी उपनाम रसलीन कवि ने अपने "रसप्रबोध" नामक ग्रन्थ के (जो रसमंजरी आदि महान् ग्रन्थाश्रय सम्पन्न अद्वितीय ग्रन्थ विद्यमान है) दूती बिभेद में कैसा लिखा है । मेरे जान, उत्तमादि भेद की यह रीति उत्तम निकाली । यदि संदेह हो तो "रसप्रबोध" के ६६ पृष्ठ १३ की पंक्ति देख लीजिये ।

क्रमशः उदाहरण ॥

उत्तमादूतिका यथा कवित्त ।

सुन्दर सुदेस मध्य मूठी मे समात जाको प्रगट न गात बेस बदन सवारी है । कहै कवि दूलह सु रमनी नेवाज औ छँटाक भरी तौल मानो सांचे कैसी ढारी है ॥ पेटी है नरम अति डीजिये गोविन्द गहि निपट नवेली पै समर सुर वारी है। रीझि गुनमान गोसे गोसे सो मिलैगी मुलतान के कमान के समान प्रान प्यारी है ॥ ४८ ॥

मध्यमा दूतिका यथा ॥ दोहा ।

बेगि आय सुधि लेहु यह अली कह्यो घनस्याम ।
मै देख्यो वह चातिकी रटति तिहारो नाम ॥ ५० ॥

अधमादूतिका यथा ।

कैसी धौं तेरी अरी परी बान यह आन ।
जैसीयै मोतें कढ़त तैसी करति बखान ॥ ५१ ॥

हितावान दूतिका यथा—कवित्त ।

सुथरी सुसीली सुजसीली सुरसीली अति लंक लच-कीली काम धनुख हलाका सी । कहै कवि तोख होती सारी तें नियारी जबै कारी बदरी में बढ़ै चंद के कलाका सी ॥ लोने लोने लोयन पै खंजन झमक वारों दंतन च-मक चारु चंचला चलाका सी । सांवरे सुजान कान्ह तुम

तें छिपाऊं कहा सेज पै सोआऊं आनि सोने की स-लाका सी ॥ ५२ ॥

देखतहीं सब ही के सुधि बुधि भूलि मन अटक रहैगी ऐसी चटक चढ़ाऊंगी। रोखी तजि उत्तम अनोखी चारु चोखी कर नेह पट पोखी आछी ओप अधिकाऊंगी॥ कहै हरदास एहै सुघर सयानी सुन लेऊंगी रंगाई रंग रंग सो बनाऊंगी। पाग यह स्याम की रंगोंगी पीत रंग तेरी चूनर सुरंग स्याम रंग रंगि ल्याऊंगी ॥ ५३ ॥

आज एक ललना अन्हात में निहारी लाल पीन प-योधर बीन बानी छीन लंक है। जमुना के जल बीच कंठ के प्रमान पैठि धोए जो लिलार लाग्यो मृग मद अंक है ॥ मुख अरु पानि के परस होत रघुनाथ आनि ऐसी लसी सोभा परम असंक है। बारिज को ना तो मानि धोल करिबे को मानो कोल कलानिधि में को धोवत कलंक है ॥ ५४ ॥

हिताहित बाम दूतिका यथा।

चंदन चढ़ावै ना लगावै अङ्ग राग कछू चौसरा च-मेली के नबेली भार क्यों सहै। पेन्है ना जवाहिर जवाहिर से अङ्ग दुत्त भौंरन के भय भाजि भौन भीतरै गहै॥ राति हू दिवस छबि छटा छहराती चारु अंगना अनंग की न

ऐसी छबि को लहै। कैसे वह चंदमुखी आवै नद नन्द बंधु बधुन चकोरन के नैनन घिरी रहै ॥ ॥ ५५ ॥

अहिता बान दूतिका यथा ।

पौरही में ठाढ़े रहो बाढ़े वर ही के लला चौकी है हमारी यहां बूझनो सहल है। अरज तिहारी वरी हैक में करौंगी अबै मोजराई सखिन के चहल पहल है ॥ गोकुल के नाथ आए गोपन के साथ दीजै सिगरो बिसार यहां गुरुता गहल है। अदब सें रहो बे अदब की कहो न बात वृन्दावन महारानी राधा को महल है ॥ ५६ ॥

स्वयं दूतिका यथा ।

सहर मझावत पहर एक लागि जैहै छोर में नगर के सराय है उतारे की। कहत कविन्द मग माझ ही परैगी सांझ खबर उड़ाती है बटोही हैक मारे की ॥ घर के हमारे परदेस को सिधारे यातें दया के विचारी हम रीति राह बारे की। उतरो नदी के तीर वर के तरे ही तुम चौंको जिन चौकी यहां पाहरू हमारे की ॥ ५७ ॥

ननद नवेली सो रिसानी रहै आठो जाम बगर हमारो जहां लागत न कर है। भनै जब रेस बट पार ये डकैत फिरैं रैन है अंधेरी एक भरो आबे सर है ॥ पीतम हमारे परदेस में विचारे बसे स्याम घन घेरि आयो यही

एक डर है। एरे बीर पथिक निगोरे कही मान मेरी दूर है सराय जहां चोरन को घर है ॥ ५८ ॥

आए हो कहां तें कहा जावगे बटोही सुनो बसिहो कहा जू तुम आगे जंगलान में। दूर है सराय जहां बसें चोर चौकीदार एक डर आवे नहिं और संगलान में ॥ भने जवरेस देख फरस फुहारन के मन में विचार करो अति अंगलान में। पीतम हमारे परदेस को सिधारे याते इत तें निकसि बसो खस बंगलान में ॥ ५९ ॥

सासु मेरी राधिका की सौति सो न जाने कछू पांचै ज्ञान इन्द्रिन सो ज्ञान ना बताई है। देवकीनन्दन कहै सुनो हो बिहारीलाल पथिक तिहारे भाग ही तें रैन आई है॥ तीन मेरी दूती जे प्रबीन परमेश्वर तें रची बिधि एकै करि हमै कठिनाई है। एक सूरदास दासी एक जगन्नाथ दासी एक भृगुदास दासी ताकी एक आई है॥ ६० ॥

आंगन हमारे बीच एक रूख बेर को है सोई दुसराई तन कोई आस पासई। ननद जेठानी गई सकठ कहा-नी सुनै आयो है बलौआ न्योति लै सिधायो सासई ॥ सैंयां तो गोसैंयां जाने कौन देस गौन कियो रहत कहा धौं औ बसत कौन बासई। दिया जे जरत बिन तेल सो झलमलात भूत औ पिसाचन सों अजू जिय त्रासई ॥६१॥

दिनना धरीको घनघेरि घहरान लागे अवनि अंधरी ह्वै है आभा इन्दरन की। पथिक थोरोही थोरी उमिरि अकेली बीर अकुलाइ नाहीं गहीं गैल कंदरन की ॥ द्रु-मन लतान में दिखातियै नजीकहीसी दूर दूरताई सेततांई मंदरन की। कविपजनेस कोसे दाहिने छुश्रोसे कोसे डगर नगीची बीच बाधा बन्दरन की ॥ ६२ ॥

पावस अमावस की निसि अंधियारी कारी सासु है प्रबास मेरी ननद नदान जू। सूनो सुख भौन है परोस को भरोस कौन पाहरू न जागत पुकार परे कान जू ॥ पण्डित प्रवीन प्यारो वसत बिदेस पति लागो है अंदेस अति रसिक सुजान जू। एहो ब्रजराज राज सुनि कै अरज मेरी आज बसि जैये बसि जैये तो बिहान जू ॥६३॥

सवैया।

आधिक जाम करो बिसराम कुमार अराम की कुंज इतै है। अन्त बसंत के ग्रीखम की लपटैं न घटैं दिन सांझ समै है ॥ छांह घनी पियो नीरजनीर सुसीत समीर लगै सुख दै है। हाल लखो फल लाल रसीली रसाल लता में कहूं मिलि जैहै ॥ ६४ ॥

दोहा।

बसो पथिक या पौर में यहां न आवै और।

यह मेरो यह सासु को यह ननदी को ठौर ॥ ६५ ॥

तृतीषट्कर्मान्तर्गत विनय यथा—कुंडलिया।

हा हा बदन उघार दृग सफल करैं सब कोय। रोज सरोजन के परे हंसी ससी की होय। हंसी ससी की होय देख मुख तेरो प्यारी॥ बिधना ऐसी रची आपने हाथ संवारी। कह पठान सुलतान मेटु उर अन्तर दाहा॥ करु कटाच्छ इहि ओर मोर बिनती सुन हा हा॥ ६६॥

निन्दा यथा—सवैया!

खेलति फाग सोहागभरी सुथरी सुर अंगना तें सुकुमारि है। जैये चले अठिलैये उतै इतै कान्ह खड़ी व्रखभान कुमारि है॥ संभु समूह गुलाब के सीसन ढारि कै केसर गारि बिगारि है। पामरी पांवड़े होति जहां तहां को लला कामरी पै रंग डारि है॥ ६७॥

खेलति होरी किसोरी जहां जिन पै रतिरम्भा रमा गई वारि कै। सोंधों तहां सजिये हरि जाय जहां जनिये कोऊ ग्वारि गवारि कै॥ संभु सरोज से पानि सुजान गहे पिचकारी गुलाब जो गारि कै। सो न खराब करैगी लला कमरी पर केसर को रंग डारि कै॥ ६८॥

कंज से संपुट हैं ये खरे हिय में गड़ि जात ज्यों कुंत के कोर हैं॥ मेरु हैं पै हरि हाथ न आवत चक्रवती पै बड़ेई कठोर हैं॥ भावती तेरे उरोजन के गुन दास लखे

सब औरहू और हैं। संभु हैं पै उपजावै मनोज सुचित्त हैं पै परचित्त के चोर हैं ॥ ६८ ॥

स्तुति यथा—कवित्त।

अंग तेरो केसर सो करिहां केसर कैसी केसन की सरि कैसे करि सके को तमै। कहै कविगंग आछे छवि के छबीले नैन नीलेज नलिन ऐसे नाहीं देखे होत मै॥ अहे हे अहीरी तू धों इहो कछु जानति हो काके भाग औतरी है तोसी तेरे गोत मै॥ तरुनी तिलक नन्दलाल त्यों तिलक तांकि तोपर हों वारों तिल तिल के तिलोत मै॥ ७० ॥

दोहा।

दंपति देह छवि गेह की किहि विधि बरनी जाय।
जिहि लखि चपला गगन तें छिति पर फरकति आय॥७१॥

तुव अंग सहज सुबास की सरि न लहै खस खास।
नहि चंपक नहिं केतकी नहिं केसर की रास॥ ७२॥

तेरी बानी बीनसी बीनासी सुखदानि।
तामें बीना वादिनी बैठी आनि महानि॥ ७३॥

मुख ससि निरखि चकोर अरु तन पानिप लखि मीन।
पद पंकज देखत भंवर होत नयन रस लीन॥७४॥

बिरह निवेदन यथा—कवित्त।

एक हती खीनी पर एती पै न एती मान भई अति

दूबरी बिरह ज्वाल जरती। पास धरो चंदन सुबासही तें बाढ़े ताप होतो जो समीर तो उसासें ना उसरती॥ चंदन की रेख रही आभा अवसेख सुतो देखते बनत पै न कहत बनै रती। ल्यावती गोविन्द अरविन्द की कली में राखि जो न मकरन्द बीच डूबबे को डरती॥ ७५॥

दूरिही तें देखत बिथा मैं वा बियोगिनि की आइ भले भाजि ह्यां इलाज मढ़ि आवैगी। कहै पदमाकर सुनोहो घनस्याम जाहि चेतत कहूं जो एक आहि कढ़ि आवैगी॥ सरसरितान कों न सूखत लगैगी देर एती कछू जुलुमिन ज्वाल बढ़ि आवैगी। ताके तन ताप की कहौं मैं कहा बात मेरे गातही छुवे ते तुमै ताप चढ़ि आवैगी॥ ७६॥

दोहा।

कहा कहौं वाकी दसा जब खग बोलत राति।
पीय सुनतहीं जियति है कहा सुनत मरि जाति॥७७॥
तैं दीनो लीनो सुकर छुवत छनक गो नीर।
लाल तिहारो अरगजा उर ह्वै लग्यो अबीर॥ ७८॥
जब तें आई तड़ित लौं नीलाम्बर में कौंधि।
तब तें हरि चकृत भए लगी चखनि चक चौंधि॥ ७९॥

प्रबोध यथा—सवैया।

कंचन की ककई कर लै हरे हेर हंसौंहें कही यह

नाइन। रात के सोवत को सपनो अपनो सुन लीजिये मेरी गोसाइन॥ पै न चलाइये बात कहूं सुनि पावै न कोउ कहूं की चवाइन। नोखे वे ठाकुर नंद किसोर अ-नोखी बनी तू नई ठकुराइन॥ ८०॥

संघट्टन यथा—कवित्त।

सोने कीसी डार सुकुमार बारे हैं सेवार सुन्दर सुढार कि मूठी में समानी है। मोतिन की माल मोती बेसर को लेत हाल मोती से दसन मुख मोती को सो पानी है॥ ल्याई हों बुलाय कै बलाय लेउ लाल बाल देखत ही भलो मेरो मानिहो मैं जानी है। नैन सुख दैन चित चैन होत सुने बैन ऐन मैन मैनका कि मैनहीकी रानी है॥ ८१॥

सवैया।

नव कुंजन बैठे पिया नंदलाल जू जानत हैं सब कोक कला। दिन में तहं दूती भोराय के ल्याई महाकबि धाम नई अबला॥ जब धाय गही हरिचंद पिया तब बोली अजू तुम सोहि छला। हमि लाज लबै बलि पाय परों दिन हीं हहा ऐसी न कीजे लला॥ ८२॥

दोहा।

गोरी को जु गोपाल को होरी के मिसि लाय।

बिजन सांकरी खोरि में दोउ दियो मिलाय ॥ ८३ ॥

रमनी रमन मिलाय यों दूती रहति बराय ।

घन दामिनि को जोरि कै ज्यों समीर रहि जाय ॥८४॥

इति दूती भेद अथ सूर्य्योदय चन्द्रोदय वर्णन ।

उद्दीपन के हेत के हेत जानि रबि चंद ।

बरनत उद्दीपनहिं में सुमिरि सांवरो चंद ॥ ८५ ॥

सूर्य्योदय ।

सूर उदय तें अरुनता पय पावनता होय ।

संख वेद धुनि मुनि करैं पंथ चलै सब कोय ॥ ८६ ॥

कोक कोक नद सोकहत दुख कुवलय कुलटानि ।

तारा औषधि दीप ससि घुघू चोर तम हानि ॥ ८७ ॥

यथा सवैया ।

बीत गई सिगरी रजनी चहुं ओर तें फैल गई नभ लाली । कोक बियोग मिट्यो परिपूर उदै भयो सूर महा छबि साली ॥ बोलि उठे बन बागन में अनुरागन सों चहुंधा चटकाली । सुन्दर स्वच्छ सुगंध सने मकरन्द झरै अरबिन्द तें आली ॥ ८८ ॥

चन्द्रोदय व०—दोहा ।

कोक कोकनद बिरह तम मानिनि कुलटनि दुख्ख ।

चन्द्रोदय तें कुंबलयनि जलधि चकोरन सुख्ख ॥ ८९ ॥

यथा कवित्त ।

हरत किसोर जो चकोरन को ताप कर कुमुद कलाप मुकुली कर सु छन्द भो । मानिनीन हूं के मन दरप द-लित कर कंदरप कंदलित कर जग बंद भो ॥ मुदत कमल अवलीकर तिमिर धवली कर दिसान कवली कर अनन्द भो । अम्बुध अमित कर लोकन मुदित कर कोक अमुदित कर समुदित चंद भो ॥ ८० ॥

द्वादश मांस वर्णन तत्रादौ चैत्र व०

चंपक चमेलिन के चमन चमतकार चमू चंचरीक की चितौत चोरैं चितहैं । चांदी को चबूतरा चहूंधा चम चम करै चंदन सों गिरधर दास चरचित हैं ॥ चारु चांद तारे को चंदोवा चांद चांदनी सो चामीकर चोपन पै चंचला चकित है । चूनिन की चौकी चढ़ी चंदमुखी चूड़ामनि चाहन सों चैन करैं चैन के चरित हैं ॥ ८१ ॥

बैशाख यथा ।

मैन मद माते मजेदार मनोहर महा मुनि मनिमंतन के मन के मथन हैं । मनिन को महल महाल मनो म-न्मथ को गिरधर दास तामे मोद मई मन हैं ॥ मंजु म-ल्लिकान की महंक मंजरीन की मधुप फिरैं मत्त मधुमादक मगन हैं । माधव के मास मध्य माधव मयंक मुखी मौज करैं मिले मनो मानिनी मदन हैं ॥ ८२ ॥

जेष्ठ यथा ।

जगह जराज जामे जरे हैं जवाहिरात जगमग जोति जाकी जग सौं जगति है। जामि जदु जानि आन प्यारी जात रूप ऐसी जग मुख जाल ऐसी जोन्ह सी जगति है॥ गिरधर दास जोर जबर जवानी को है जोहि जोहि जल-जा हू जीय में जकति है। जगत के जीयन के जीय सौं जुराए जीय जोय जोखिता को जेठ जरनि जरति है ॥८३॥

आषाढ़ यथा ।

आनन अमल उडु अधिप अधिक आछो अंबुज सो अद्‌भुत आभा ईछननि में। अभय अमोल ओज आगर अनूप अति अमल उरोज अहैं ईस उबतनि मे॥ आछे अवलोके तें अनंग अंगना उमाहि आवती न गिरधर दास आदरनि में। अबला अनोखी ऐसी ईस सो उमंग सजैं आयो है असाढ़ ओढ़े आनद अवनि में॥ ८४ ॥

श्रावण यथा ।

सोना से सरीर पै सिंगारन सुभग सजि सेज साजि साजि स्याम संगम सुखन मैं। सुन्दरी सिरोमनि सोहा-गिनि सलोनी सुचि स्यामा सुकुमारि सोहै सीसा के सदन मैं॥ सीस सीस सुमन सोहायो गिरधर दास सूर सरसात ज्यौं सकारे सरपन मैं। सिंधु सुता सैल सुता सारदा सची सी सुचि सावन मैं सरसै सरस सखियन मैं॥ ८५ ॥

भाद्र यथा ।

नभ नीर देत नील नीरद नगेस कैसे नाद करै सुनि नाक नाग करै नति है । नदी नद नारे नीर निधि नीर पूरे नए नलिन नसाए त्यों निदाघता नसति है । गिरधर दास नग नाइनीप नग धरे नाग अति नाचें नेह नदी निकरति है नभ मास नागर को नागरी निरखि ऐसे नवल निकुंज में निपुन निरतति है ॥ ८६ ॥

आश्विन यथा ।

केत की कुमुद कंज केवरा कदम कुन्द कुसुम कलित भए कानन कतार मे । कुंज कुंज केकी कीर कोकिला कलोल करें कोकी कोक किलकैं त्यों कालिन्दी कछार मे ॥ कीरति कुमारी कंजनैनी कल कमलासी काम की सी कलना कलित करतार मे । गिरधर दास करैं केलि कोक कलाधर कोटि कोटि भांति कान्ह कुंवर कुवार मे । ८७ ॥

कार्तिक यथा ।

कलित कलाधर मे कुंद कलिका कतार कंज पै कमान कीर पासक बिकल है । कानन मे कनफूल गिरधर दास कांति कुंदन सी केहर सी कमर कुसल है ॥ कुंतल कुटिल कंठ कंबु सो कपोत मोहै देख कलिताई काम कामिनी कतल है । ऐसी कमनीय कंजमुखी कंत कान्हर सों करै केलि कातिक मे करन कमल है ॥ ८८ ॥

मार्गशीर्ष यथा ।

अतिहि अराम देत ऐन को अराम अभिराम आठो ओर ओखो ऐस अवलन मे । आसन अनूप आपईस हैं असीन जापै अच्छ अवलोकि है उदासी अंवुजन मे ॥ गिरधर दास एको उपमा न आवति है ईंगुर सी आछी अरुनाई अधरन मे । अंग धर इन्दु मुखी ओज सों अमल ऐसे लसे अजनम से अजब अगहन मे ॥ ९९ ॥

पूस यथा ।

पवन के पायन की पलंग पुरट बनी पलंग पुरन्दर की पावती न परतल । पाटी पद्मराग पर बाल औ पिरोजन की जापै पखी पद्म सो परम पट परिमल ॥ गिरधर दास पौन पुहुप पराग लै प्रगट पहुंचावैं परमा सों पूरी पल पल । प्रेम पगी पूस मे प्रिया को पिया प्यार करैं प्यारे को लखत पद्मिनी के ना परहिं पल ॥ १०० ॥

माघ यथा ।

मनि मय महि मुद दानि मनोहर मंजु मानिक के मंदिर महान मूसैं मन हैं । मालती की महंक मलिन्द मदमाते फिरैं मिले मकरंदन सों मौलसिरी मन हैं ॥ गिरधर दास मुकुताहल की माला धरे मदन महीपति के मद मरदन हैं । माघ के महीना मैन मोहन मयंक मुखी मजेदार मौज करैं मन मे मगन हैं ॥ १०१ ॥

फाल्गुण यथा ।

गिरधरदास फूलवारी फूले फूलन सों फलवारे फलन सों फलित फबत हैं। फटिक से फरस पै फरस फरास रच्यो फबनि सों फलक निवासी ह्वी फबत हैं॥ फाटक फराक फनधर फन फबनि को फरक मे फरकी फिरोजा की फकत हैं। फरहत भरे फूलें फागुन मे फनी बंधु फील की फिरनि ऐसो फिरनि फिरत हैं॥ १०२॥

इति मास अथ ऋतु—बरवै ।

वर बसंत मधु माधव अति सुखदान ।
कहत जेठ सुचि * ग्रीषम ताप निधान ॥ १०३ ॥
सावन हिय हुलसावन भादो मास ।
बरसा रितु कवि बरनत सहित हुलास ॥ १०४ ॥
आसिन कातिक कवि जन सरद बखान ।
बिलसत लखि अंबुज को परम निदान ॥ १०५ ॥
अगहन पूस परम जन कहत हिमंत ।
जामे सुख सों बिलसत कामिनि कंत ॥ १०६ ॥
सिसिर माघ अरु फागुन आनद खान ।
नृत्य गान करि हरषत परम सुजान ॥ १०७ ॥
या बिधि कवि जन खट रितु करत बिधान ।

---

* सुचि—आषाढ़ ।

यातें यामे बरन्यो निपट अजान ॥ १०८ ॥

अब खट रितु के क्रम तें लच्छन लच्छ।

बरनत सत कबि मग लखि सुन्दर स्वच्छ ॥ १०९ ॥

दोहा।

बरनि बसंत सु पुष्प अलि बिरहि बिदारन बीर।
कोकिल कलरव कलित बन कोमल सुरभि समीर ॥११०
तातें तरल समीर सुख सूखे सरिता ताल।
जीव अबल जल थल बिकल ग्रीषम सफल रसाल ॥१११
बरषा हंस पयान बक बादर दादुर मोर।
केतिक कंज कदंब जल सो दामिनि घनघोर ॥ ११२ ॥
अमल अकास प्रकास ससि मुदित कमल कुल कास।
पंथी पितर पयान नृप सरद सु केसवदास ॥ ११३ ॥
तेल तूल तामोल तिय ताप हरन रबिवंत।
दीह रजनि लघु द्योस सुन सीत सहित हेमंत ॥११४॥
सिसिर सरस मन बरनि सब केसव राजा रंक।
नाचत गावत रैन दिन खेलत रहत निसंक ॥ ११५ ॥

तत्रादौ बसंतागमन यथा कवित्त।

गुंजरन लागीं भौंर भौरैं केलि कुंजन में कोलिया के मुखतें कुहूकन कढ़ै लगी। द्विजदेव तैसे कछू गहब गुलाबन तें चहकि चहूंघा चटकाहट बढ़ै लगी॥ लागो

सरसावन मनोज निज ओज रति बिरही सतावन की बतियां गढ़ै लगी। होन लागी प्रीति रीति बहुरि नईसी नवनेह उनईसी मति मोह सों मढ़ै लगी॥ ११६॥

गौनहद होन लागी सुखद सु भौन लागी पौन लागी बिखद बियोगिन के जियरान। सुन्दर सवाद लै सु भोजन लगन लागी जगन मनोज लागी जोगिन के जियरान॥ कहत गुलाब बन फूलन पलास लागी सकल बिलासन के समय सु नियरान। दिन अधिकान लागी रितु पति आन लागी तपन सु भान लागी पान लागी पियरान॥ ११७॥

वैसही बिदेस के जवैया रहे गौन तजि मौन तजि वैसे मंजु कोकिल कलाप भो। द्विजदेव वैसही मलिन्दन को मोद कर मल्लिका मरुअ माधवीन सों मिलाप भो॥ वैसही संजोगी जुरि जोवन लगे हैं कुंज वैसही बियोगिन के वृन्द को बिलाप भो। वैसही बहुरि मोह बान बरसन लागे वैसही सगुन फेरि मनसिज चाप भो॥ ११८॥

माते मकरन्द के मलिन्दगन गुंजरत मंद मंद सोई मंत्र मोहन सुनायो है। कहै गिरधारी खुली खोपरी कपोतिन की तोमरी की तान कोकिलान सुर गायो है॥ गोली सी निकल रहीं कलियां गुलाबन की नए नए आमन की जात उपजायो है। राज ब्रजराज जू को राजी

करिबे को आज बाजीगर ब्रज मे बसंत बनि आयो है ॥ ११९ ॥

फूले हैं पलास लाल लहरें निसान सोई बौरे हैं र- साल बरछी सो धार सानि की। गुंजरत मंजुल मलिन्द वृन्द आस पास मन्द गति भासत गयंद हैं पयानि की ॥ गोकुल पराग रज उड़े पंथ फूलन के कोकिला बिरद बर बोलें बीर बानि की। मान बलवन्त गढ़ काटा करबेको अंत आयो म बसन्त सैन मैन मरदानि की ॥ १२० ॥

तारे जहां सुभट नगारे पिकनाद जहां पैदल चकोर कोर बांधि बद बेस की। गुंजरत भौंर पुंज कुंजरत मोर जहाँ पौन झकझोर घोर घमक हमेस की ॥ भनत क- बिन्द सर फौज है बसन्त आली मिले तंत कंत सो मनोज मान पेस की। मानवारी गढ़ी वे गुमान ढाहिबे के लिये चढ़ी असवारी है निसाकर नरेस की ॥ १२१ ॥

बसंतराज श्री यथा।

अवनि अकास अंबु अनिल अनल आभा औरै भांति भई जो मनोज महि मंत की। करजनि मानि या दि- सानि ह्वै गई है मंद मति ह्वै गई है सब जातु जग जंत की ॥ कहत किसोर जोर जरब कुजोगिन को भोगिन को भावती बियोगिन के अंत की। उलही उमंगन तें लखि

लसि रही तैसी लहलही लौंदत पै लहर बसंत की॥१२२॥

छोरें छोरें डोलतीं सुगंध सनी डारन तें औरै औरै फूलन पै दुगुन फबीहै फाव। चोथते चकोरन सों भूले भए भौंरन सों चाखो और चंपन पै चौगुनों चढ़ो है आब॥ द्विजदेव की सों दुति देखत भुलानो चित दस गुनी दीपति सों गहब गर्छ गुलाव। सौ गुनै समीर ह्वै सहस गुने तीर भए लाख गुनी चांदनी करोर गुनो महताब॥१२३॥

बल्ली को वितान मल्ली दल को बिछौना मंजु महल निकुंज है प्रमोद बनराज को। भारी दरबार भिरी भौंरन की भीर बैठी मदन दिवान इतमाम काम काज को॥ पंडित प्रवीन तजि मानिनी गुमान गढ़ हाजिर हजूर सुनि कोकिल अवाज को। चोपदार चातक बिरद बढ़ि बोले दर दौलत दराज महराज रितुराज को॥ १२४॥

मदन प्रशंसा।

आगे आगे दौरत वकील गंध बाह ऐसे पाछे पाछे भौंरन की भीर भट भीम है। बाजि राजि किंकिनी मजीठ कल गाजे जबै घूघट ध्वजा मे मैन सीम भुज सीम है॥ कहा लाल सौरभ पै चंदन पै जाकी जीत ऐसो कौन भूतल मे गब्बर नगीम है। मदन महीप बाज सदन सु सिरताज मदन बहादुर की कापर मुहीम है॥ १२५॥

बसंत बायु वर्णन।

कैसी अलि राजे अलि अवलि अबाजे आज सुमन सुमन राजैं छिन छिन छूकैंये। कहत गुलाल औ रसालन पै सुकजाल बोलत बिसाल तें न भोगत मरूकें ये॥ धीर को धराती छाती कौन अबला की अब कोक की कला की कोकिला की सुनि कूक ये। जल थल गंजन सुरस रस रंजन सु मान को प्रभंजन प्रभंजन की भूकें ये १२६

बागन मे चारु चटकाहट गुलाबन की ताल देत तालिया तुलैन तुक तंत को। गुंजत मलिन्द वृन्द तान की उपज पुंज कलरव गान कोकिलान किलकंत की॥ गोकुल अनेक फूल फूले हैं रंगे दुकूल भूमे आम बौर हाव भाव रसवंत की। लहरैं तरुन तरु छहरैं सुगंध मंद नाचत नटीलीं आवे बैहर बसंत की॥ १२७॥

मलयज गिरि तरु कोस तें कढ़ी है चढ़ी मंजु मकरन्द पुंज पानिप अपार सी। कहत किसोर चारो ओरन बिखम बेस प्रबल प्रचंड पेखि झरपत झार सी॥ अलि बिख बूड़ी बलि करत कहा है जापै सौरभ की लहर धरी है खरी धार सी। रहति न रोकी बरे चहति बियोगिन पै बैहर बसंत की तिरीछी तरवार सी॥१२८॥

सवैया।

सुन्दर सोहै सुगंधित अंग अभंग अनंग कला ललिता

है। तैसी किसोर सोहात सुजोगिन भोगिन हूं की मनोहरता है॥ संग अली अवली रबि राजत अंग रसीली बसीकरता है। कोमलता जुत बीर बसंत की बैहर कै बनिता कै लता है॥ १२९॥

कबित्त।

बिहरैं बिपिन मे बिटप की हलाय डार कियो पत-भार जाकी गति है दिगंत लौं। मंजु की सुगंध मधु फूलन कपोलन के माते मधुकर गुंजरत रसवंत सो॥ सिंह सम सिसिर के सीत को सिसिर करि दीनो है भगाय ब्रज बड़े बलवंत जो। मंद मंद चलत भरत मकरंद मद मदन मतंग कैधौं मारुत बसंत को॥ १३०॥

मधुव्रत वर्णन।

हहराय उठत परत भहराय भूमि मंजु २ गुंजरत कुंज २ इतराय। आय चारु चूमत पुहुप पटली को पाय पुनि मधुपी को अंक भरत निसंक धाय॥ खाय २ घूमरी को भरमत ठौर २ दौर २ श्रीकबि पराग धूसरित काय। पाय मधुरस आज निपट अघाय घाय दुख बिसराय कान करत मधुपराय॥ १३१॥

सामान्य बिरहिनी यथा।

सौगुन करैगी हम सांवरे सुजान मन जान तुमकहो

हम क्यों हूं ना चलायहैं । कालिदास बाग बन पवन सुमन मधु मधुकर कोकिल समेत लिखवाय हैं ॥ क्योंकर चलोगी हमे छाड़ि कै छबीले छैल चतुर चितेरिन के हाथ दे पठाय हैं । जमुना समेत ब्रजमंडल समेत चंद चांदनी समेत चैत चित्र मे लिखाय हैं ॥ १३२ ॥

मधुकर माल बन बेलिन के जाल पर कोकिल र-साल पर कुहुक अमंद की । मंद पोन सीतल सुबास भई बागन बिलास मई कालिदास रास मकरन्द की ॥ देखिये सयान बइसाख मे पयान करै कान्ह को दया न होत गो-पिन के वृन्द की । कैसे देखि जीहैं चढ़ि चांदनी महल पर सुधाकी चहल बसुधा की चारु चंद की ॥ १३३ ॥

बिशेष बिरहिनी यथा ।

अवनि तें अम्बर तें द्रुमनि दिगंबर तें अपर अडंबर तें सखि सरसो परै । कोकिला की कूकन तें हियन की हूकनि तें अतन भभूकनि तें तन तरसो परै ॥ कहत किसोर कंज पुंजन तें कुंजन तें मंजु अलि गुंजन तें देख दरसो परै । बसन तें बासन तें सुमन सुबासन तें बेहर तें बन तें बसंत बरसो परै ॥ १३४ ॥

सांझ ही तें दर परदान देहौं दुरि रही एक जिय संक या कलानिधि कसाई की । कंत की कहानी सुनि श्रवन सिहानी रैन रंचक बिहानी या बसन्त अन्त

धाई की ॥ कलकी न नेक आली पलकी लगन पाई टरि कित गई नींद नैनन में आई की । कुहकयो कोकिला कुमति मै उघायो दृग जागि के जु देखौं ज्वाल जरत जुन्हाई की ॥ १३५ ॥

प्यारे के वियोग आली उठी आगि वृन्दावन जरती सहेट कुंजें सुन्दरी महा महा । बौरे कचनार आंच उठति पलासन तें कुसुम करील दीठ परति जहा जहा ॥ मंसाराम तिने भेटि आवत समीर बीर तयौ जात तन तालो लगति तहा तहा । मृग अधमारे बिललात हैं भंवर कारे कोइलिया कोप ले पुकारति कहा कहा ॥ १३६ ॥

जेइ जेइ सुखद दुखद अब तेइ तेइ कबिमंडन बिकुरत जदुपत्ती । सीतल मंद सुगन्ध लगत जेइ तेइ बन अनिल अनल सोतत्ती ॥ तरु भए तीर व्याल भइ बेइलि जम भइ जमुन कुसुम भो कत्ती । जेइ बन तब बिहरत गोपाल संग तेइ बन अब बिहरन लगि छत्ती ॥ १३७ ॥

सवैया ।

आयो बसन्त तमालन तें नव पल्लव की इमि जोति जगी है । फूलि पलास रहे जित ही तित पाटल रातहि रङ्ग रङ्गी है ॥ मौर के अंबन सार भई तिहि ऊपर कोकिल आनि खगी है । भागन भाग बचो बिरही जनु बागन बागन आग लगी है ॥ १३८ ॥

फूले घनें तरु जाल बिलोकि छुते कछु सूने सुभाय ससेरी। आगि सी लागी पलासन देखि तजे भय सों कहूं भागि अचेरी॥ छूटे सचान से ये अब तो द्विजदेव चहूंदिसि कोकिल बैरी। ह्वै है कहा सजनी अब धौं बचि है किहि भांति सों प्रान पखेरी॥ १३९॥

आहि कै कांपि कराहि उठी दृग आसुन मोचि सकोचि धरी द्वै। लै कर कागद कोरो लला लिखिबे कहं बैठी वियोग कथा स्वै॥ ऐसे में आनि कहूं द्विजदेव बसंत बयारि कढ़ी तितही ह्वै। बात की बात में बौरी तिया अरु पीत ह्वै पाती परी कर तें च्वै॥ १४०॥

आगत पतिकाभिलाषिनी यथा।

आवत ही हहराय हियो सुख अन्त कियोई हिमंत कुचाली॥ त्यों द्विजदेव या पांचै बसंत की पीत करी सिगरो तन साली॥ जारती ज्वालन होरी न क्यों लखि सूनो निकेत बिना बनमाली। सीत के अन्त बसन्त के आगम भावतो जोपै न आवतो आली॥ १४१॥

बसन्तकोआशीर्वाद।

मिलि माधवी आदिक फूल के ब्याज बिनोद लवा बरसायो करै। रचि नाच लतागन तानि बितान सबै बिधि चित्त चुरायो करै॥ द्विजदेव जू देखि अनोखी प्रभा

अलि चारन कीरति गायो करै। चिरजीवो बसन्त सदा द्विजदेव प्रसूनन की झरि लायो करै ॥ १४२ ॥

इति बसन्त।

अथ ग्रीष्म तत्रादौ ग्रीष्म समयासुभावाख्यानम्

कवित्त।

चंड कर झारत झकोरत सरीस पौन तोरत तमाल गन मंद दिन भारो सो। धर्स के धरनि गिरि तमकै प्रताप जाको देखत मजेज रेज जगत निदारो सो॥ तरु छीन छाया सर सूखत समुद्र बन करन बिचार देखो आतप अंगारो सो। छावत गगन धूर धावत धधात आवै चाय चढ़ो ग्रीषम गयंद मतवारो सो ॥ १४३ ॥

जीवन को त्रास कर ज्वाला को प्रकास कर भोरही तें भासकर आसमान छायो है। धमका धमक धूप सूखत तलाव कूप पौन को न गौन भौन भागी मे तचायो है ॥ तकि थकि रहे जकि सकल बिहाल हाल ग्रीषम अचर चर ख चर सतायो है। मेरे जान काहू वृषभान जग मोचन को तीसरे त्रिलोचन को लोचन खोलायो है ॥१४४॥

जेये बिना जीरण सो जल की जिकिर जीभ जक्यो जात जगत जलाकन के जोर तें। कूपसर सरिता सुखाय सिकता मै भई धाई धूरि भोरन धराधर के ओर तें॥ बेनी कवि कहत अनातप चहत सब अगिनि सी आतप

प्रकास चहुं ओर तें। तावा सो तपत धरा मंडल अखंडल सुमारतंड मंडल दवासो होत भोर तें॥ १४५॥

तपत प्रचंड मारतंड महिमंडल मे ग्रीषम की तीखन तपन आरपार है। गिरझर कहै काच कीच सो बहन लाग्यो भयो नद नदी नीर अदहन धार है॥ झपट चहूंहन तें लपट लपेटी लूह सेस कैसी फूक पौन झूकन की झार है। तावासी अटारी तपी आवा सी अवनि महा दावा से महल औ पजावा से पहार है॥ १४६॥

तपै इत जेठ जग जात है जरन जासों ताप की तरनि मानों भर निकरत है। इतही असाढ़ उठे नूतन सघन घन सीतल समीर हिये हीतल भरत है॥ आधे अंग ज्वालन के जाल बिकराल आधे सुखद समोद हिये धीरज धरत है। सेनापति ग्रीषम तपत रितु भीखम है मानो बड़वानल सो बारिध बरत है॥ १४७॥

उछरि उछरि भेकी झपटैं उरगपै उरग पग केकिन के लपटैं लहकि है। केकिन की सुरति हियेकी ना कछू है भए एकी करी केहरि न बोलत बहकि है॥ कहै कवि ब्रह्म बारि हेरत हरिन फिरै बैहर बहति बड़े जोर सों जहकि है। तरनि कै तावन तवासी भई भूमि रही दसहू दिसान में दवासी यों दहकि है॥ १४८॥

प्रबल प्रचण्ड चण्ड कर की किरिनि देखो बैहर उ-दण्ड नव खण्ड घुमिलत है। अवनि कराही कैसो ते ल रतनाकर सो नैन कबि ज्वाला की जहर झलकत है॥ ग्रीखम की ज्वाल जाल कठिन कराल यह काल ज्वाला-मुखो ह्व की देह पघिलत है। लूका भयो आसमान भूधर भभूका भयो भभकि भभकि भूमि दाना उगिलत है॥ १४६॥

आवासी अवनि धुंधी धूप रूप धूमकेतु आंधी अन्ध कूप डारे लोचन अनैसे कै। जमक जलाकुन की नाकन की लौह चले व्याकुल जगत सांझ पावै जैसे तैसे कै॥ लोकपति लूक से उलूक से लुकत बेनी कुंज छाया जहां तहां छाय रही ऐसे कै। कोठरो तखाने खस खाने जल खाने बिन ग्रीखम के बासर बितीत होत कैसे कै॥

सीरे तहखाने तामें खासे खसखाने सोंधे अतर गु-लाब की बयारें रपटत है। भूधर संवारे हौज छूटत फुहारे और बारे भारे ताब दान धूप दपटत है॥ ऐसे समै गौन काहु कैसे के बनै तो प्यारे सुधा के तरंग प्यारी अंग लपटत है। चंदन किवार घनसार के पगार दई तऊ आनि ग्रीखम की झार झपटत है॥ १५१॥

घोरि घनसारन सों सखिन कपूर चूर लीपे तहखाने सुख दीने है दुदण्ड की। तामें खसखाने बने ऊजरे

बिताने सुर भौन के समाने जे निदाने ठाने ठंड की ॥ बहत गुलाब के सुगन्ध सों समीर सने परत फुही है जल जंत्रन के तंड की। बिसद उसीरन के फोर परदान प्यारे आन कर ऐंधतीं मरीचैं मारतण्ड की ॥ १५२ ॥

ग्रीष्मोपचारो यथा।

महल सुमालती के चंदन चहल बीच सींच कर संदल सों तर कर राखौंगी। भर हर हौदन गुलाब औ सिताब आब आफताब नेक कहूं तनक न राखौंगी ॥ खसकी खुसीकी चिकैं चकत चहूंघा चारु परत फुहार फुही फुंकरत राखौंगी। बल्लभ बिलोकौ क्यों न आज ब्रजराज साज काल्हह्ल सुगन्ध रचि सेज सजि राखौंगी॥

चन्दन महल मध्य चन्द्रक चहल चारु चांदनी मी चिकैं चंद चांदनी सोहाई है। तर अतरन कर बिजन बयार नीर नहर बिमल बारि चौगिर्द चलाई है ॥ फरस गुलाबन की परत फुहीसी परमानद गुलाबन की गिलम बिछाई है। ग्रीखम गरम घर्म पावै क्यों प्रवेस जहां आज महाराज ब्रजराज की अवाई है ॥१५४॥

जल जंत्रवर्णन सवैया।

है जलजंत्र कै मोहनी मंत्र बसीकर सीकर कै अवली सो। कै सिसिके हितमोद भरो जलजात अकास है

भूमि थली सो ॥ कै मुकताहल को बिरवा कि रचो हथ-फूल जलेस रली सो। कंज सनाल तें कै मकरन्द चलो तरराय के भांति भली सो ॥ १५५ ॥

कबित्त ।

अंबर अतर तर चन्द्रक चहल तन चंदमुखी चंदन महल मैन साला से। खासे खसखाने तहखाने तरताने तने ऊजरे बिताने छुवे लागत हैं पाला से ॥ दत्त कहै ग्रीखम गरम की भरम कौन जिन के गुलाब आब हौज भरे ताला से। झाला सों झरत झर झांपन सों बारा बांधि धाराबांधि छूटत फुहारा मेघ माला से ॥ १५६ ॥

महमहे महल सुमल्लिका के राखे रचि मालती की चिकैं चारु चौरटद बिसाला सी। फरस गुलाब गुलआब के फुहारे भारे छूटत धुंधारे मनो मेघन की माला सी। दा-मोदर कहै जहां अतर तरंगे उठै अंगें बदरंगें होत सौतिन को साला सी ॥ करति कला है बाला आला सुख सेजही में ग्रीखम बनाय राखी सिसिर के पाला सी ॥ १५७ ॥

चंदन चहल चोवा चांदनी चंदेवा चारु घनो घनसार घोरि सींच महबूबी के। अतर उसीर सीर सौरभ गुलाब नीर गजब गुजारें अंग अजब अजूबी के॥ फेरन फबत फैली फूलन फरस तामें फूल सी फबी है बाल सुन्दर सुखूबी

के। बिसद बितानै तानै तामें तहखानै बीच बैठी खस-खानै में खजानै खोलि खूबी के ॥ १५८ ॥

अभिसार यथा।

भरियत गहरे गुलाब हद छोदन सुधरियत रजत फुहारे तदबीर के। ढरियत ठारन सुढारन नहर नीर दरियत घनसार सरद गंभीर के॥ करियत तर अतरन सों बिछौना कबि सोभ जू उघरियत बातायन तीर के। चंदन पलंग अरबिन्दन की सेजपर सुन्दरि सिधारी आज मंदिर उसीर के॥ १५९॥

जलक्रीड़ा यथा।

ग्रीखम बिहार भौन सांवरे के ढिग गौन करि उत-साह सों सहेली लिये संग की। होत जल केलिन के बि-बिध बिधान तहां बाढ़ी है ललक उर मदन उमंग की॥ ता समै भई जो सोभा बरनी न जात मोपै दमकि उठी है दुति दूनी अंग अंग की। नागरी वे कैसी लगें तरनि तरंगन में पानी पर पावक ज्यों फिरत फिरंग की॥१६०॥

थलक्रीड़ा यथा।

दोऊ अनुराग भरे आए रंग भौन भाग मघवा सची को लखि लागत सहल है। बैठे एक आसन पै एकै संग

एकै रंग रच्यो ना परत अंग कोमल कहल है ॥ एकन ले अतर लगायो देव दुहुन के छिरक्यो गुलाब कीने बिजन बहल है । लैकै कर बीनै परबीनै अलियां अलापैं मंजु सुर पुंजन सों गुंजत महल है ॥ १६१ ॥

सीतल महल महा सीतल पटीर पंक सीतल कै लीप्यो भीति छिति छात दहरैं । सीतल सलिल भरे सीतल बिमल कुंड सीतल अमल जलजंत्र धारा छहरैं । सीतल बिछौनन पै सीतल बिछाई सेज सीतल दुकूल पैन्हि पौढ़े हैं दुपहरैं ॥ देव दोऊ सीतल अलिंगनन लेत देत सीतल सुगन्ध मंद मारुत की लहरैं ॥ १६२ ॥

चोवा चोक चांदनी चंदेवा चिकैं चौकी चोक चंपक चंपावली चमेली चारु चोज है । खासे खस फरस उसीर खसखाननि में पजन कपूर चंदनादि करि चोज है ॥ लाली लखि ललित लली के लाल लोइन में अमल गु- लाब दलमलत उरोज है । अवनि असीतल पै ग्रीखम तपीतल पै पिय हाथ हीतल पै सीतल सरोज है ॥१६३॥

चंदन चहल चित्रमहल सुदेस सोहै रस बतियान सों प्रमोद सखियान में । खासे खस फरस फुहारे फुही फैल फैल फैल भर सीतल समीर छतियान में ॥ गोरे गात सोहै गरे गजरा चमेलिन के पोहे बर सुघर सहेली अति-

ध्यान में । गाढ़ लै उरोज कर परस गुलाब जल छिरकत लाड़िली लली के अंखियान में ॥ १६४ ॥

बिरहिनी यथा ।

ग्रीखम में भीखम है तपत सहसकर बापी तारे नारे नद नदी सूखिजात हैं । झंझा पौन झरपि झरपि झकझोरि झोरि धूरि धार धूसरे दिगन्त ना दिखात हैं ॥ श्रीपति सुकबि कहै आली बनमाली बिन खाली जग मोहि कैसे बासर बिहात हैं । तावा सो अजिर पगलावा से तचत घर भयो गिरि आवा से पजावा से धुंआत हैं ॥

इति ग्रीष्म--अथ पावस ।

तत्रादौ पावसागमन यथा छप्पै ।

निलिव संग घन मत्त मत्त मातंग प्रमत्तहं । तरल तुरङ्गम पौन गौन कीनेंव रस मत्तहं ॥ चंचल चपल चहुंओर तेग तड़िताहि चमंकिय । अवनि रही जल पूरि पूरि रणरङ्गन रंकिय ॥ अति किनिव मान चकचूर जिहि बासव धनु विद्या पढ़िव । उड़त मयूर करखा पढ़त पावस घन प्रगटिव चढ़िव ॥ १६६ ॥

करिव क्रुद्ध बड़ वुद्ध जुद्ध मंडी घनघोरैं । अनि रही जल पूरि धूरि दब्बिय छिति छोरैं ॥ उमड़ि चले नद नद्द सद्द जल धारन झिल्लिय । दिवन दव्यो दिवि देव व्योम तम तोम सुमिल्लिय ॥ झंझा पवन उतपत उथप दिग-

मंडल मंडल छयव । अति गरब गंज ग्रीखम गरम पावस घन उद्दत भयव * ॥ १६७ ॥

नाचत कलापी जूह संग लै कलापिनि को झिल्लिन की भीर झनकार कै जमक रही । दादुर करत सोर घोर चहुंओरनि तें देख बकपांति बिरहीन को धमक रही ॥ द्विज कहै येरी कैसी समय सुहावनि है मोहन सों मिलि लखि लतिका लमकिरही । छाइ छाइ मेघ रहे चावनि सों व्योम माहिं धाइ धाइ चहूंओर चपला चमकि रही ॥ १६८ ॥

बिरहिनीयथा—कवित्त ।

अमित सिखंडिन की मंडी धुनि मंडल मे झींगुर झकोर झिल्ली झरप झरापै री । चंचल ह्वै चपला चमंकै चंड चारो ओर चातक चुनौती पीवपीवहि अलापै री ॥ कहै नँदलाल गाढ़ अगम असाढ़ आयो दादुर दरेरन की

---

* संस्कृत प्राकृत और भाषा के परमाचार्य्य पण्डित गंगाधर शर्मा (सभासद् वर्तमान महाराजा टिहरी) ने चन्द कवि रचित छप्पयों के उपमार्थ ये दो छप्पै रचा है । इन का बनाया "मर्तंड प्रकाश" नामक साहित्य का अद्वितीय ग्रंथ विद्यमान है ।

दरत दरापै री। एरी उर कापै प्राननाथ कुबुजा पै अब कौन सहै दापै धुरवान की धरापै री॥ १६९॥

आढ़ आढ़ करत असाढ़ आयो एरी आली डर से लगत देखि तम के जमाक तें। श्रीपति ये मैन माते मोरन के बैन सुनि परत न चैन बुंदियांन के झमाक तें॥ झिल्ली गन झांझ झनकारें ना संभारें नेक दादुर दपट बीज तर से तमाक तें। भरकी बिरह आग जरकी कठिन छाती दरकी सजल जलधर की धमाक तें॥ १७०॥

कंत बिन आवत सदन ना सजनि मोपै बिरह प्रबल मैन कोप्यो अति बाढ़ के। श्रीपति कलोलें बोलें कोकिल अमोलें खोलें गौन गांठि तोलें गौन राखैं गाढ़ गाढ़ के॥ हहरि हहरि हिय कहरि कहरि करि थहरि थहरि दिन बीते जिय माढ़ के। लहरि लहरि बीज फहरि फहरि आवै घहरि घहरि उठे बादर असाढ़ के॥ १७१॥

धमकि नगारन सो मेघन गराज कीनो चपला च-मकि किरपान दरसायो है। भूपति मनोज की ध्वजान फहरान लागी बक मेड़रान असमान भरि छायो है॥ दादुर नकीब चहुं ओर सों पुकार करैं मोरन की हांक सुनि सुरन जनायो है। ऐसो समै जानि के गुमान मत ठान प्यारी गाढ़े दल साजि के असाढ़ चढ़ि आयो है॥१७२॥

घन दरसावन हैं बिज्जु तरपावन हैं चहूं ओर धावन

हैं बेहर सगाढ़ की। मानिनी भयावन हैं मोर हरखावन हैं दादुर बोलावन हैं अति आढ़ आढ़ की॥ श्रीपति सोहावन हैं झिल्ली झनकावन हैं बिरही सतावन हैं चिन्ता चित बाढ़ की। लगन लगावन हैं मदन जगावन हैं चातकी के गावन हैं आवन असाढ़ * की॥ १७३॥

कंपू बन बागन कदंब कपतान खरे सूबेदार साहब समीर सरसायो है। कहै पद्माकर तिलंगो भीर भृंगन की मेजर तमूरची मयूर गुन गायो है॥ काहट करै है घरराहट अटानन की येही अरराहट अराबन को छायो है। मान मुख भंगी सफ जंगी ये निसंगी लिये रंगी रितु पावस फिरंगी बनि आयो है॥ १७४॥

आई रितु पावस न आए प्रान प्यारे यातें मेघन ब-रज आली गरजन लावैं ना। दादुर हटकि बकि बकि के न फोरैं कान पीकन पटकि मोहि सबद सुनावैं ना॥ बिरह व्यथा तें हौं तो व्याकुल भई हौं देव चपला चमकि चित चिनगी उड़ावैं ना। चातक न गावैं मोर सोर ना मचावैं घन घुमड़ि न छावैं जौलों लाल घर आवैं ना॥१७५॥

सरद ससी तें अध ससी ह्वै बची हौं कबि चिन्तामनि तिमि हिमि सिसिर झमक तें। मारत मरूके बची बधिक

* आषाढ़ मास ग्रीष्म का है, कवियों ने पावस में क्यों वर्णन किया ?

बसंत हू तें पावक प्रचार बची ग्रीखम तमक तें ॥ आयो पापी पावस ये प्रान अकुतान लाग्यो भायो री असान घोर घन के घमक तें। ताप तें तचौंगो जो पै अमिय अचौंगी आली अब ना बचौंगी चपलान की चमक तें ॥ १७६ ॥

बियत बिलोकत ही मुनि मन डोलि उठे बोलि उठे बरही बिनोद भरे बन बन। अकल बिकल ह्वै बिकाने हैं पथिक जन उर्द्ध मुख चातक अधोमुख मराल गन ॥ बेनी कबि कहत मही के महा भाग भए सुखद सँजोगिन बि-योगिन के ताप गन। कंज पुंज गंजन कृषी दल के रंजन सु आए मान गंजन ये अंजन बरन घन ॥ १७७ ॥

जल भरे झूमि मनो भूमि परसत आय दसहू दिसान घूमि दामिनी लए लए। धूम धारे धूसर से धुरवा धुधारे कारे धुरवान धारे धावैं छबि सों छए छए ॥ श्रीपति सु जान कहै घरी घरी घहरात तापत अतन तन ताप सो तए तए। लाल बिन कैसे लाज चादर रहैगी बीर कादर करत मोहि बादर नए नए ॥ १७८ ॥

धूम से धुधारे कहूं काजर से कारे ये निपट बिकरारे मोहि लागत सघन के। श्रीपति सोहावन सलिल बर-सावन सरीर मे लगावन बियोगिन तियन के ॥ दरजि दरजि हिय लरजि लरजि करि अरजि अरजि पाय पकरे

मदन के। बरजि बरजि अति तरजि तरजि मो पै गरजि गरजि उठैं बादर गगन के ॥ १७९ ॥

तम की जमक बक पांति की चमक जोति झींगन झमक चमकनि चपलान की। बैहर झकोरैं मोरै रोरै चहुं ओरै सोरै प्रेम के हलोरै धोरै धुनि धुरवान की॥ रतिया जमकि आई छतिया उमगि आई पतिया न आई प्यारे श्रीपति सुजान की। नेह तरजन बिरहा के सरजन सुनि मान मरदन गरजन बदरान की ॥ १८० ॥

मेचक कवच साजि बाहन बयारि बाज गाढ़े दल गाजि उठे दीरघ बदन के। भूखन भनत समसेर सोई दामिनी है हेत नर कामिनी के मान के कदन के॥ पैदर बलाके धुरवान के पताके देखि घेरि घेरि आवैं चहुं ओर ही सदन के। ना कर नरादर पिया सों मिल सादर सु आए बीर बादर बहादर मदन के ॥ १८१ ॥

दनके दसो दिसा दुनाली धोढ़ दामिनि के घन के नगारे भारे उर उर झनके। झनकै झनाक झुंड झींगुर झिगुर बाजे सनके समीर तीर सक्र सरासन के॥ सनके समर मद मेचक भिलम धारै ठनकै नकीब दर्प दादुर दमन के। मन के नदन के बिन कामिनि कदन के ये आए बीर बादर बहादर मदन के ॥ १८२ ॥

तड़िता तरर त्यों इरम्मद अरर घन घोर की घरर

झनकारैं झींगुरन की । पौन की लहक त्यौं कदम की महंक लागी दाहक दहन लै लै सोमा उरगन की ॥ भनत कविन्द बिन नाह ये सनाह साजे पटा झर घटा फेरैं क्यौंहू ना मुरन की । पेरैं भटू मन को श्ररैरैं करैं आठो जाम टेरैं बरहीन की दरेरैं दादुरन की ॥ १८३ ॥

मरज बढ़ावै महा दुर्जन फरज बांधे काज ना करत कछू कारज सौं आने री । चरजन जाने हिये दरज दुरावै हाय बरज न सीखे समै पीतम पयाने री ॥ भनै रघुराज अब अरज न सुनै नेक बिरही परज परजन अनुमाने री । तरजन जाने और हरज न जाने नेक गरजन जाने मेघ गरज न जाने री ॥ १८४ ॥

एक तो बिदेसी बिन ऐसई दुखी हौ मैं तो दूसरे प्र-चंड लागी पावस सताने री । बच्चन जू बादर को आदर न मेरे यहां निपट अनारी आयो बिरह बढ़ाने री ॥ झ-रबे की हौस है तो जाय मथुरा मे झर सांवरो मिलैगो तोहि सौत के ठिकाने री । अरज न माने बीर हरज ह-मारो करे गरजन जाने मेघ गरज न जाने री ॥ १८५ ॥

धीर गयो ही को सुनि सोर बरही को बीर नाम लै लै पीको या पपीहा आन पीको है । मेघ अवली को घोर पौन अवली को वहै मार अवली को हाय मार अवली को है ॥ नाह से पथी को कहूं आयबो न ठीको लग्यो

देखि अवनी को रंग लागत न नीको है। डारै अध जी को मोहि कीने अधजी को यह रहत नजीको भेद जानत न जी को है ॥ १८६ ॥

आली रितु ग्रीखम बिताई दिन पीय बिन कठिन कठिन करि बची हौं मरी मरी। अब तो इलाज को रह्यो ना कछु काज लखि उठों ये घटान व्यथा उमड़ी खरी खरी ॥ अजहूं न आए हरी झरी जल भरी भूमि चहूं ओर देखो बन ह्वै रही हरी हरी। छूटन लगी री धीर धुरवा निहारी प्रान लूटन लगी री बोल मूरवा घरी घरी ॥ १८७ ॥

पावस प्रबेस पिय प्यारी परदेस ये अंदेस करि झांकति है महल दरी दरी। बकन की पांति इन्दु बधुन की कांति लखि भांति भांति बादर बिसूरति घरी घरी ॥ पवन की झूकैं सुनि कोकिल की कूकैं गुनि उठी हिय हूकैं लगी कापन डरी डरी। परी अलबेली जिय खरी तलबेली तकै हरी हरी बेली बकै व्याकुल हरी हरी ॥१८८॥

राजै रसमैरी तैसी बरखा समैरी चढ़ि चञ्चला न चैरी चकचौंधे कौंधे बारैरी। ब्रती ब्रत हारै हिये परत फुहारै कछु छौरै कछु धारै जलधर जलधारैरी ॥ भनत कविन्द कुंज भौन पौन सौरभ सों मदन कपाय कै न पहरत पारैरी। कामकेतुका से फूल डोल डोल डारैं मन औरैं करि डारैं ये कदंबन को डारैरी ॥ १८९ ॥

हरे बन जरे से जरी सी लागी हरीभूमि कारी घन घटा ज्यों प्रलै की घेर घहरैं। लागे फनी फन को फुआर सी बयार बार बुन्द बिख बान सम छाती छेद छहरैं ॥ गावैं मोर करखा यों बरखा समै में काम कालिदास कान्ह बिन गोकुल में थहरैं : महल झरोखन में झांकतही लागि उठे जमकी सी चावुक ये जमुना की लहरैं ॥१९०॥

झंझा पौन झूकें अंग लागी सब सूकें त्योंही उठत भभूकें पंचबान जू के बान की। दसो दिसि हूकें देखि दौरे मेह ढूकें लगें चातक उलूकें भनि देवन अघान की॥ झिल्ली नहिं भूकें चुप होय जो मरूकें त्योंहीं जल के कनूकें होत प्यासी आय प्रान की। गए स्याम जू कें उपजावें हिय हूकें एक धुरवा की धूकें दूजे कूकें मोरवान की॥ १९१॥

सीतल सुगंध मन्द डोले कि न डोले पौन धूरवा धुरारे चहे धावे चहे धावे ना। प्यारे मनभावन के आवन की औधि गई बिरह सुकल चहे पावे चहे पावे ना॥ प्रानन की प्यासी सौत पावस प्रचंड भई अब वै कलापी चहे गावे चहे गावे ना। जतन अनेकन सों अब ना बचौंगी बीर अब वै बिदेसी चहे आवै चहे आवे ना॥ १९२॥

बाजत नगारे घन ताल देत नदी नारे झींगुरन झांझ भेरी भङ्गन बजाई है। कोकिल अलाप चारी

नीलग्रीव नृत्यकारी पौन बीन धारी चाटी चातक लगाई है ॥ मनिमाल जुगनू मुबारक तिमिर थार चौमुख चिराग चारु चपला जनाई है। बालम बिदेस नए दुख को जनम भयो पावस हमारे ल्याई बिरह बधाई है ॥ १८३ ॥

मोरन की सोर सुनि पिक की पुकार सुनि चातक चिकार सुनि सूनी स्याम जामिनी। जुगनू चमक छबि गगन कुहुक रहै झींगुर बिसेख सेख डरी गज गामिनी ॥ झरि झरि आवे नीर कांपै सकल सरीर पीतम बिदेस कैसे धीर धरै कामिनी। मारि डारे मदन मरोरि डारे बादर दबाय डारे दादुर दरेरि डारे दामिनी ॥ १८४ ॥

सावन सोहावन या लगत भयावन सो आवन अवधि अब सोचैं गजगामिनी। ऐहैं बलबीर कबहूं धौं ह्यां कि नाहिं ऊधो कैसे धीर धरैं ये अधीर ब्रज कामिनी ॥ जब तब जींगन की जोति जगै ज्वाल जैसी जम की जमाति सी जनाति जाति जामिनी। जारे हैं पपीहरा पुकारैं पीय पीय टेरि घेरि मारै बादर दरेरि डारै दामिनी ॥ १८५ ॥

बरसत मेह नेह सरसत अंग अंग झरसत देह जैसे जरत जवासो है। कहै पद्माकर कलिन्दी के कदंबन पै मधुपन कीनों आय महत मवासो है ॥ ऊधो यह ऊधम जताय दीजो मोहन को ब्रज सो सुबासो भयो अगिनि

अवासो है। पातकी पपीहा जलपान को न प्यासो काहू बिथित बियोगिन के प्रानन को प्यासो है ॥ १८६ ॥

साची कहैं रावरे सों भांवरे लगैं तमाल आवै जिहि काल सुधि सांवरे सुजान की। फूल भार भरीं डार जैसे जमजाल ऊधो कालिन्दी कछार सजी धार ज्यों कृपान की ॥ चपला चमक लगै लूक ह्वै अचूक हिये कोकिल कुहूक बरजोर कोर बान की। कूक मोरवान की करेजा टूक टूक करैं लागति हैं हूकैं सुनि धुनि धुरवान की ॥१८७॥

डोलैं पौन परसि परसि जल बुन्दन सों बोलैं मोर चातक चकित उठी डरि मैं। कहा लौं बराऊं दई मारे मैन बानन सों थकि रही केतिको उपाय करि करि मैं ॥ दत्त कबि प्यारे मनमोहन न पाऊं कहो मन समुझाऊं री कहालों धीर धरि मैं। छाए मेघ मंडल सोहाए नभ मंडल मे आए मन भावन न सावन की झरि मैं ॥१८८॥

मद मई कोकिल मगन ह्वै करत कूकैं जल मई मही पग धरत न मग मे। बिज्जु नाचै घन मे बिरह हियबीच नाचै मीच नाचै ब्रज मे मयूर नाचै नग मे ॥ श्रीपति सुकबि कहै सावन सोहातन मे आवन पथिक लागे आनद भोअँग मे। देह छायो मदन अछेह तम छिति छायो मेह छायो गगन सनेह छायो जग मे ॥ १८९ ॥

धावत धुरारे धुरवान की निहारी प्रिय चातक म-यूर पिक आनद मगनभो । श्रीपति जू सावन सोहावन के आवन मे बिरह सुभट ते बियोगिनी को रनभो ॥ जल मई धरनि तिमिर मई दह दीह घन मई गगन तड़ित मई घनभो । छबि मई बन भो बिलास मई तन भो स-नेह मई जन भो मदन मई मन भो ॥ २०० ॥

छायो नभ मंडल घुमड़ि घन श्रीकवि जू आनद अथोर चारो ओर उमगत है । पायो मद मालती को कुंज २ गुंजत है भौंर दुख पुंज गेह गेह तें भगत है ॥ धायो देश देश ते बिदेसी सब कण्ठ लायो निज निज ती को भरो मोद सों जगत है। आयो सखी सांवन सोहां-वन सही पै मोहि बिन मनभांवन भयांवन लगत है २०१

इति विरहिनी ।

अथ विरही ।

घाघरे की घुमड़ उमड़ चारु चूनरी की पायन मलूक मखमल बार जोरे की । भृकुटी कुटिल छूटी अलकैं क-पोलन पै बड़ी बड़ी आंखिन मे छबि लाल डोरे की ॥ तरिवन तरल जराज जरबीलो जोर खेदकन ललित ब-लित मुख गोरे की । भूलत न भामिनी को गावन गुमान भरी सावन मे श्रीपति मचावन हिंडोरे की ॥ २०२ ॥

चूनरी की चहक चमंक चारु चोपन की चूरियों की चुहर चितौन चखचोरि की। कहै पद्माकर मनोज मद माती मजा मेंहदी की महंक मजेज मुख मोरि की ॥ गोला गव्व गंजन गोराई गोलगालव की गहगही गालव गोराई गात गोरि की। हरित हराकी हीर हारकी हमेलह की हलन हियांई हरै हलन हिडोरि की ॥ २०३ ॥

संयोगिनी यथा ॥ सवैया।

कालिँदी कूल कदंब की डारन कूजत केकिन के गन एखैं। तुंग तरंगित त्यों जमुना तहं तामहं सोर करैं बहु भेकैं ॥ मंदहि मंद सु गाजत है घन राजत बूंद महीन अलेखैं। बल्लभ राधिका स्याम तहां सुभ स्याम घटान अटा चढ़ि देखैं ॥ २०४ ॥

कवित्त।

मल्लिकन मंजुल मलिन्द मतवारे मिलैं मंद मंद मारुत मुहीम मनसा की है। कहै पदमाकर त्यों निनद नदीन तित नागर नवेलिन की नजर नसा की है ॥ दौरत दरेरो देत दादुर सु दूदै दीह दामिनी दमंकन दिसान में दसा की है। बद्दलन बुन्दन बिलोको बकुलान बाग बंगला नवेलिन बहार बरसा की है ॥ २०५ ॥

संयोगी यथा ।

स्याम असमानो स्याम भयो असमानो तैसो लखि अ-
समानो सुख सजि असमानो री। सब अहिरानो दुख सहि
अहिरानों फूले फिरैं अहिरानो संग हरि अहिरानोरी ॥
गिरधरदास ताप मिय्यो धुरवानो खंड उठे धुरवानो किये
धीर धुरवानोरी। सुखबर सानो रीझि लियो सरसानो री
त्यों यह बरसानो रीति रस बरसानो री ॥ २०६ ॥

दोला क्रीड़ा ।

भौंरन को गूंजिबो बिहार बन कुंजन मे मंजुल म-
लारन को गावनो लगत है। कहै पदमाकर गुमानहूं मे
मानहूं मे प्रानहूंते प्यारो मनभावनो लगत है ॥ मोरन
को सोर घनघोर चहुं ओरन हिंडोरन को बृन्द छबि
छावनो लगत है। नेह सरसावन मे मेह बरसावन मे
सावन मे झूलिबो सोहावनो लगत है ॥ २०७ ॥

तीर पर तरनि तनूजा के तमाल तरे तीज की त-
यारी ताकि आई तखियान मे। कहै पदमाकर सु उ-
मगि उमंग उठे मेहंदी सुरंग की तरंग नखियान मे ॥
प्रेम रंग बोरी गोरी नवल किसोरी तहां झूलति हिंडोरे
यों सोहाई सखियान मे। काम झूले उर मे उरोजन मे
दाम झूले स्याम झूले प्यारी के अन्यारी अखियान मे ॥

फूली फूल बेली सी नबेली अलबेली बधू झूलति

अकेलो काम केलो सी बढ़ति है। कहै पद्माकर झमंक की झकोरन सों चारो ओर सोर किंकिनीन की काढ़ति है॥ उर उचकाय मचकीन की मचामच सों लंकहि लचाय चाय चागुनी चढ़ति है। रति बिपरीत की पुनीत परिपाटी सुतो हाँसनि हिंडोरे की सु पाटी पै पढ़तिहै॥

दोऊ मखमूल झूल झूलैं मखतूल झूला लेत सुख मूल कहि तोख भरि बरसात। छूटि छूटि अलकैं कपोलन पै छहरात फहरात अंचल उरोज है उघर जात॥ रहो रहो नाहीं नाहीं अब ना झूलावो लाल बबाकी सों मेरे ये जुगल जानु थहरात। ज्योंहीं ज्यों मचत लचकत लचकीलो लंक संकन मयंक मुखो अंकन लपटि जात॥२१०॥

रहसि रहसि हंसि हंसि के हिंडोरे चढ़ी लेति खरी पेंगैं छबि छाजै उकसन मे। उड़त दुकूल उघरत भुजमूल बढ़ी सुखमा अतूल केस फूल की खसन मे॥ अति सुकमारि देख भए अनमेख स्याम रीझत बिसूर श्रम सीकर लसन मे। ज्यों ज्यों लचकीलो लंक लचकत भावती को त्यों त्यों उत प्यारो गहै आंगुरी दसन मे॥२११

झूलत हिंडोरे बँधी प्रेम रंग डोरे मनिमाल उर डोलैं संग डोले मनि माल के। छाए श्रम सीकर तुसार के हंसी कर मनोज के बसीकर लचत लंक बाल के॥ भावन के

राग भरी गावन लगी हैं राग कानन सोहान लागे कोकिल रसाल के। पैन अति चंचल चलत चख चंचल ह्वै फहरत अंचल सुरंग पट लाल के ॥ २१२ ॥

सांवन की तीजैं पिया भीजैं बारि बुन्दन सों अंग अंग ओढ़नी सुरंग रंग बोरे की। गावत मलारैं धुरवान की धुकारैं कहूं झिल्ली झनकारैं झनकारत झकोरे की ॥ करत बिहार दोऊ अतिही उदार भरे बीर कहै मंद सोभा पौन के झकोरे की। झमक झरी की त्यों चमक चारु चपला की घमक घटा की तामें रमक हिंडोरे की ॥

सवैया।

सांवन तीज सोहावन को सजि सोहै दुकूल सबै सुख साधा। त्यों पदमाकर देखे बनै कहते न बनै अनुराग अगाधा ॥ प्रेम के हेम हिंडोरन में सरसैं बरसैं रस रंग अगाधा। राधिका के हिये झूलत सांवरो सांवरे के हिये झूलति राधा ॥ २१४ ॥

कबित्त।

फुह २ बुन्द झरै बीर बारि बाहन तें कुह २ सब्द होत कीर कोकिलान की। ताही समै स्यामा स्याम झूलत हिंडोरे बैठे वारों छबि कोटिन मै रति पंचबान की ॥ कुंडल लटक सोहै भृकुटी मटक मोहै अटक चटक

पट पीत फहरान की। झूलत समै की सुधि भूलत न हूलत री उझकनि झुकनि झकोरनि भुजान की॥२१५॥

दोहा।

बल्लभ चित चातक सरिस घन सो श्रीघनस्याम।
तिहि पद जलकन परसि अब चाहत है बिसराम॥२१६॥

इति पावस—अथ सरद।

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै वृन्दावन बीथिन बिहार बंसी बट पै। कहै पद्माकर अखण्ड रासमंडल पै मण्डित उमण्ड महा कालिन्दी के तट पै। छिति पर छान पर छज्जत छटान पर ललित लतान पर लाड़िली के लट पै। आई भले छाई यह सरद जुन्हाई जिहि पाई छबि हाजही कन्हाई के मुकुट पै॥२१७॥

आस पास पुहुमी प्रकास के पगार सोहै बनन अगार दीठि ह्वै रही बिबर तें। पारावार पारद अपार सो दिसन बूड़ी चंद सूर दोऊ दिन रात बिधिबर तें॥ सरद जुन्हाई अन्हुजाई धार सहस सुधाई सोभा सिन्धु नभ सुभ्र गिरिवर तें। उमड्यो परत जोति मंडल अखण्ड सुधा मंडल मही तें बिधु मंडल बिबर तें॥२१८॥

आई रितु सरद गगन बिमलाई छाई खंजन की राजी कुंज कुंजन बसै लगी। हरित हरित पथ पथिक सिधारे पथ अकय मुरारि मौज जग बिलसै लगी॥ सुमन

सरासन के सुमन सरासन तें छूटि के सुमन सर आली ही गसै लगी। तालन कमल फूले कमल बितूले अलि अलि पर पीतमा पराग की लसै लगी ॥ २१९ ॥

चंद निसि ललना बदन लखि धाई किधौं पारद की खान फैल आई आसमान है। कैधों सुख के प्रबोध सुखित सकल सुर लोकन के कलहास भासै भासमान है ॥ मेरे जान मदन मही़प सब जीति छिति ऊपर चढ़ायो कित करखा समान है। कैधों तारागन मुकताहल के झूमकन चांदनी न होय चारु ताही को बितान है ॥२२०॥

विरहिनी।

हिलि मिलि जोखन में झांकति झरोखन में हियरा में हिलकी दृगन असुवा रमै। कालिदास कहै आन कामिनो कुरंग नैनी दामिनी ज्यौं देखी जाति दमक दुआर में ॥ जोन्ह में दहैगी दुख ऐसे क्यों सहैगी जैसे सीता पार सागर के रघुबर बार में। नन्द के कुंअर कान्ह कैसे कही पैहो जान छाड़ि ब्रखभान जू की कुंअरि कुआर में ॥ २२१ ॥

देखिये पियारे कान्ह सरद सुधारे सुधा धाम उजियारे चौकी चामीकर दरसै। चोपैं चांदी चमकैं चंदेवा गुहे मोतिन के झलकत झालरैं जुन्हाई जोति परसै ॥ हीरा सी हंसन हीरा हार सी लसन सोंधे सारी रही

सन कबि सोभ छबि सरसै। कोर कोर कला मुख चन्द तें सरस प्यारी बादला फरस रूप झलाझल बरसै ॥२२२॥

रासक्रीड़ा।

जमुना के पुलिन उजेरी निसि सरद की राका को छपाकर किरिन नभ चाल की। नन्द को लड़ैतो तहां गोपिका समूह लै के रची रासक्रीड़ा बजै बीना सुर ताल की॥ लहा छेह गतिन की कही ना परत मोपै द्वै द्वै गोपिका के मध्य छबि नन्दलाल की। सोभा अभि-राम अवलोकि अभिमन्यु कहै एक बार बोलो प्यारे मदन गोपाल की॥ २२३॥

खनक चुरीन की त्यों ठनक मृदंगन की रुनुक झुनु-क सुर नूपुर के जाल को। कहै पद्माकर त्यों बांसुरी की धुनि मिलि रह्यो बंधि सरस सनाको एक ताल को॥ देखत बनत पै न कहत बनैरी कछू बिबिध बिलास यों हुलास यह ख्याल को। चन्द छबि रास चांदनी को पर-गास राधिका को मंद हास रास मंडल गोपाल को॥२२४॥

सरद निसा में कान्ह बांसुरी बजाई बेस जल थल व्योमचारी जीव प्रेम भरगे। कहै ब्रजचंद तजे ध्यानहू मुनीसन ने त्योंही मानिनीन के गुमान मद झरगे॥ चकित सचीस रजनीसहू थकित भये तुरत स्वयंभू मोह

जाल बीच परगे। संभुहू की भूली आधी अंग की बि-
राजी गौरि गौरिहू के गोद के गजानन बिसरगे ॥२२५॥

भूल्यो गति मति चंद चलत न एक पैंड़ प्रान प्यारे मुरली मधुर कलगान की। फूली कुसुमावलि बिबिध नव कुंजन में सौरभ सुगन्धताई जात न बखान की॥ बाजत मृदंग ताल झांझ मुरचङ्ग बीन उठत संगीत जहां अति गतितान की। आज रसरास में अनूप रूप दोऊ नचैं नन्दलाल लाड़िलो किसोरी वृखभान की॥ २२६ ॥

इति सरद—अथ हिमंत।

अमल कमल दल लोचन ललित गति जरत समीर सीत भीत दीह दुख की। चन्द्रक न खायो जाय चंदन न लायो जाय चंद न निहारो जाय प्रकृति बपुख की॥ घट की घटत जात घटना घरीहू घरी छिन छिन छीन छबि रबि मुख सुख की। सीकर तुसार स्वेद सोहत हिमंत रितु कैधों कैसो दास तिय पीतम्र बिमुख की॥ २२७ ॥

बायु वर्णन।

बरसै तुसार बहै सीतल समीर नीर कंपमान उर क्यों-हूं धीर ना धरत है। राति ना सिराति सरसाति बिथा बिरह की मदन अराति जोर जोबन करत है॥ सेनापति स्याम हौं अधीन हौं तिहारी सौंहं मिलो बिन मिले सीत

पार ना सरत है । और की कहा है सबिताऊ सीत रितु जानि सीत के सताए धन रास में परत है ॥ २२८ ॥

निवेदन ।

कामरी की खोही मोही गोपन की जाई बाल आई लाल पामरी रजाई परिहरि कै । कालिदास कहै पास भई है एकन्त कत लीजिये लपेट लपटाय अङ्ग भरि कै ॥ रैन मै नगर घोस जन के बगर कीजै जगर मगर ब्रज भूमि केलि करि कै । पूस में कलाधर ये धन को न छाड़े संग तातें रंग कीजै हिये प्रेम ध्यान धरि कै ॥ २२९ ॥

उपचार—सवैया ।

सुन्दर मन्दिर अन्दर में बहु बंदनवार बितान अडोलैं । हैं परदा मखतूलन के तिहि मूल बिछी गिलमै गुलगोलैं ॥ बल्लभ दीपत दीपित हैं मनि त्यों सुकसारिका के गन बोलैं । एरी हिमन्त में राधिका स्याम करैं बहु रंग उमंग कलोलैं ॥ २३० ॥

कवित्त ।

अगर की धूप मृगमद की सुगन्ध बरबसन बिसाल लाल अंग ढाकियतु है। कहै पद्माकर सुपौन को न गौन जहां ऐसे भौन उमगि उमङ्ग छाकियतु है ॥ भोग औ संयोग हित सुरति हिमन्तही में एते और सुखद

सोहाए वा कियतु है । तान की तरङ्ग तरुनापन तरनि तेज तेल तूल तरुनी तमोल ताकियतु है ॥ २३१ ॥

कन्दुक क्रीड़ा ।

उझकि झुकाय नेक लचकि लचाय लंक रसना कसकि दाबि दसन अमोल जू । बदन बिसाल श्रम सेद को ललित जाल डोलत कलित कच कुंडल कपोल जू ॥ पंडित प्रवीन हार दलत उरोज भार चंचल ह्वै अंचल को उघरि निचोल जू । धन्य धन्य गेंद तोहि गहते गुलाब कर खेलति नवेली करि केलि को कलोल जू ॥ २३२ ॥

बिरहिनी यथा ।

परत तुसार भार कांपे हिय हार हार रजनी पहार दिन आगि जैसे फूस की । हार हार परदे परे हैं भरे तूलन के भीतर संवारि धरे पलँग जलूस की ॥ राम कबि कहत हनत सीत अब तब आवरे सुजान तेरी छाती आबनूस की । जैसे तैसे कान्ह खटमास लों बितीत कयो निपट जवाल भई काल रैन पूस की ॥ २३३ ॥

इति हिमंत—अथ सिसिर ।

कोपि कसमीर तें चल्यो है दल साजि बीर धीर ना धरत गल गाजिबे को भीम है । सुन होत सांझही बजत दंत आधीरात तीसरे पहर मे दहल दै असीम है ॥ कहै

कवि गंग चौथे पहर सतावे आनि निपट निगोरी सुहि जानि के अतीम है। बाढ़ी सीत संका कांपे उर है अटंका लघु संका के लगे तें होत लंका की मुहीम है॥ २३४॥

सिसिर मे ससि को सरूप पावे सविताहू घामहूं मे चांदनी की दुति दमकति है। सेनापति सीतलता होति है सहस गुनी रजनी की झांईं दिनहूं मे झमकति है॥ चाहत चकोर सर ओर दृग छोर करि चकवा की छाती तजि धीर धसकति है। चंद के भरम मोह होत है कमोदिनि ससंक संक पंकजिनी फूलि ना सकति है॥२३५॥

वायु बर्णन।

नारी बिन होत नर नारी बिन होत नर राति सियराति उरू लाए पयोधर मे। बेनी कवि सीतल समीर को सनाका सुनि सोवैं सब सांझही कपाट दै सहर मे॥ पच्छी पच्छ जोरे रहैं फूल फल थोरे रहैं पाला को प्रकास आस पास धराधर मे। बसन लपेटे रहैं तऊ जानु फेटे रहैं सीत के समेटे लोग लेटे रहैं घर मे॥ २३६॥

उपचार यथा—सवैया।

राजत है इहि भांति बन्यो ग्रह बात न आति जहां बिन काजैं। हैं हंसती हंसती चहुंघा अरु त्यों हंसती ब्रज बाल बिराजैं॥ पानन को सनमान महा बहु तान

तरंगन की धुनि गावैं । बल्लभ राधिका स्याम तहां लखु सैसिर के सुख मे सुभ भावैं ॥ २३७ ॥

कवित्त ।

गुल गुली गिल मैं गलीचा हैं गुनीजन हैं चांदनी हैं चिक हैं चिराकन की माला हैं । कहै पद्माकर त्यों गजक गिजा हैं सजी सेज हैं सुराही हैं सुराहैं और प्याला हैं ॥ सिसिर के पाला को न व्यापत कसाला तिने जिन के अधीन एते उदित मसाला हैं । तान तुक ताला हैं बिनोद के रसाला हैं सुबाला हैं दुसाला हैं बिसाला चित्रसाला हैं ॥ २३८ ॥

मदन जन्मोत्सव ।

खेलन को होरी चले प्रथमहिं स्यामा स्याम बौरि नव आंम फूली सरसो समंत है । पंचमी बसंत रति कंत को जनम दिन फैली रितु कंत जू की सुखमा अनंत है ॥ गिरधर दास करै कोकिला सरस सोर चारो ओर भौरन को भीर दरसंत है । फाग मे बसंत लाल पाग मे बसंत बाल राग मे बसंत बाग बाग मे बसंत है ॥ १३९ ॥

चोर मिहीचनी क्रीड़ा—सवैया ।

चोर मिहीचनी के मिसि मोहन मोहि ना पावै फिरै बसुधा ह्वै । देखे जु देव दुकूलन मे मिलि फूलन मे ह्वै रहै

चहुंघा है॥ केसर चंदन बंदन मे मिलि कुंदन मे तन मैन दुधा है। ह्वै मकरंद रहै अरबिन्द मे इन्दु के मंदिर बिन्दु सुधा है॥ २४०॥

होरी यथा—कवित्त।

मचरही फाग और सब सबही पै घालैं रंग औ गुलाल लाल ख्याल अवलोकों मे। मो पै तुही ठाकुर लगाए घात घूमे घेरि देखौं अब जात कित इत उत रोकों मै॥ गहि लैहौं गाफिल कै छिन मै छबीले छैल छेदि कै छली जू निज नैनन की नोकों मै। ओटैं ह्वै करत पिचकारिन की चोटैं कहा सौंहैं आव सांवरे सराहौं तब तोकों मै॥ २४१॥

फरस जरी को नग जूटित जटित मनि मंडित बितान ब्रज फाग भीर भर गो। कवि पजनेस क्रीट कुंडल कपोल मुख मीड़त अबीर दृग धूँधर धुँधर गो॥ गोरी को गुलाल भरो कुँमकुँम लागो जागो बिथरि उरोजन अदा तें उझगर गो। फोर तम मंडल ब्रह्मंड को अखंड मानो अरुन उदोत हेम गिरि पै बगर गो॥ २४२॥

इति होरी।

दोहा।

संग्रह कियो अजान यह रस ग्रंथन को सार।
छमिहो चूक सुजान पुनि करिहो लै परचार॥ २४३॥

सम्वत गुन श्रुति अंक विधु माधव पूरन इन्द ।
यह मनोज की मंजरी बिकसी हेत मलिन्द ॥ २४४ ॥

इति श्री मनोजमंजर्य्यां द्वितीय कलिका समाप्ता ।

—✽✽✽—

ग्रंथावली जिस्के द्वारा यह मंजरी सुगंधित हुई है।

रसार्णव, रसप्रबोध, रसरत्नाकर, रसराज, रसिकमोहन, रसिकप्रिया, कबिप्रिया, काव्यरसायन, काव्यनिर्णय, शृंगारशिरोमणि, शृंगारलतिका सटीक, सुन्दरशृंगार, शृंगार संग्रह, शिवसिंह सरोज, सुधासर, शार्ङ्गधर पद्धति, शब्दार्थभानु, व्यंग्यार्थकौमुदी, बिहारीसतसई, बरवैव्यंग्यबिलास, बलरामकथामृत, अङ्गरत्नाकर, अङ्गदर्पण, अनुरागबाग, दिगबिजयभूषण, और जगतबिनोद इत्यादि । इन ग्रंथों के अतिरिक्त कई उद्दण्ड कवियों से अपूर्व स्फुट कविता तथा मत भेद मिले हैं [जो किसी ग्रन्थ में नहीं दीखते] अतएव उपरोक्त ग्रन्थकार तथा सहायक महाशयों को अनेकशः धन्यवाद है । जिन सत कवियों के नामादि में स्टार [✽] लगे हों उन्हें जानना चाहिये कि विद्यमान और सहायक हैं ॥

—✽✽✽—

कवियों की नामावली जिन की इस कलिका में कविता हैं।

१	* अजान (ग्रन्थकार)	१८	जवरेस
२	अभिमन्यु।	१९	ठाकुर।
३	कविन्द।	२०	तोख।
४	कालिदास।	२१	दत्त।
५	किशोर।	२२	* दामोदर।
६	कृष्णलाल	२३	दास (भिखारी)
७	केशव।	२४	दीनदयाल (काशी)
८	गिरधरदास (काशी)	२५	दूलह।
९	गिरधर।	२६	देव।
१०	गिरधारी।	२७	देवकीनन्दन।
११	गुलाब।	२८	* द्विज कवि (काशी)
१२	गुलाल।	२९	द्विजदेव(म० अयोध्या)
१३	गोकुल (काशी)	३०	नन्दलाल
१४	गंग	३१	नरोत्तम।
१५	* गंगाधर (टिहरी)	३२	नैन कवि।
१६	चिन्तामणि।	३३	पजनेस।
१७	* चुन्नी लाल।	३४	पठानसुलतान।

"अजान हजारा"

हमारे प्रिय पाठकों तथा सहायक महाशयों को विदित हो कि यह हजारा मम्मट, भरत, भानुदत्त तथा अपर ग्रंथकार मतानुसार दृश्याङ्ग काव्य, शंकर भेदों का शंका समाधान, अप्रकाशित नवीन और प्राचीन कविता इत्यादि विषयसम्पन्न प्रकाशित होगा। विशेष चमत्कार होने का यह कारण जान पड़ता है कि काशी कवि-समाज तथा मेरे सुहृद वर्गों ने सहायता स्वीकार कर ली है। अतएव आप लोगों की सेवा में यह निवेदन है कि जो कविता तथा ग्रन्थ नवीन वा प्राचीन आप लोगों के पास हों शीघ्र भेजें वे धन्यवाद पूर्वक प्रकाशित किये जायंगे, नमूने के लिये नीचे दो कविता लिखी हैं इसी प्रकार की सारगर्भित कविता होनी चाहिये॥

अजान।

कवित्त।

लावति न अंजन मँगावति न मृगमद कालिन्दी के कूल ना तमाल तरे जाति है। हेरति न घन बन गहन सनक मंगी बांधई रहति नीली सारी ना सोहाति है॥